मासिक
# अरफ़ात किरण
रायबरेली

## देश की वर्तमान स्थिति

ये बड़ी आश्चर्य व अत्यधिक अफ़सोस की बात है कि वह देश जिसने कभी अतीत में प्रेम की सुरीली बांसुरी बजायी थी और दिलकश लय में हिन्दी, संस्कृत व फ़ारसी और फिर उर्दू में प्रेम का संदेश दिया था और आख़िर दौर में जहां बैठकर मुसलमान सूफ़ियों ने मानवमित्रता और मानवता के सम्मान का पाठ पढ़ाया था और जिस धरती से गांधी जी अहिंसा का संदेश सारी दुनिया को दिया था और जिसके पास सारी भाषाओं में मानव मित्रता का साहित्य भरा पड़ा है। उस देश में आज मानवता के मूल्यों व मनुष्य की जान के मूल्य का सम्पूर्ण भाव नहीं।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

JAN 16

₹10/-

# वर्तमान समय का चैलेंज

इस समय का चैलेंज यह है कि इस्लाम को उसकी सबसे अलग सभ्यता, उसकी विशेष सामाजिकता, उसके श्रेष्ठ क़ानून, उसके अल्लाह को पहचानने के साधन, उस देश, उस मानने वालों की नस्ली ज़बान, लिपि और उसकी पूरी दीनी सभ्यता की विरासत से अलग कर दिया जाए। और इस्लाम कुछ इबादतों, कुछ रस्मों, कुछ समारोहों (जो विभिन्न धर्मों की कुल पूंजी और बहुत सी क़ौमों को अकेला धार्मिक प्रतीक है) इस्लाम उन्हीं धार्मिक व सामाजिक रस्मों का संग्रह बनकर रह जाए। मसलमानों से कभी इशारे में कभी खुलकर यह कहा जाता है कि मुसलमान अपनी इच्छा से अपनी सबसे अलग सभ्यता और हर उस चीज़ से संबंध तोड़ लें, जो उनमें अलग समुदाय और एक सभ्यता के वारिस होने का भाव पैदा करती है। वे स्वयं ही ऐलान कर दें कि हम किसी अलग सभ्यता के मानने वाले नहीं वे स्वयं अपने पर्सनल लॉ में सुधार की मांग करें या दी जाए तो उसे स्वीकार करें। वे अपने सभी शिक्षण संस्थानों को जो उन्होंने अपनी पसंद और आवश्यकतानुसार स्थापित किए थे सरकार की अधीन कर दें और उनकी व्यवस्था से स्वयं को अलग कर लें। ताकि उनसे एक ही प्रकार के नमूने तैयार किए जाएं। अस्ल ख़तरा नस्ल के ख़ात्मे का नहीं, आन्तरिक विमुखता और दिमाग़ी व सभ्यता की नस्ल कुशी का है। इस ख़तरे को देखने और इसको महसूस करने के लिए किसी दूरदृष्टि की आवश्यकता नहीं है, यह तो हर कोई समझ सकता है और अब तो बहुत सी पार्टियों क्षेत्रीय शासनों ने पाठ्यक्रम के बदलाव, हिन्दी भाषा को अनिवार्य कर देने और उसकी जबरन शिक्षा देने और एक नया इतिहास लिख देने के एलान के द्वारा इसका फ़ैसला और पॉलिसी के तौर पर ऐलान भी कर दिया।

यह ''लोकतन्त्र'' का ज़माना है। हमारे ऊपर संसद और राज्यों में विधानसभा का शासन है और उनको क़ानून बनाने का पूरा अधिकार है। फिर शासन का दायरा पहले की तरह रक्षात्मक, शांति स्थापना हेतु व टैक्स वसूल करने की हद तक सीमित नहीं है। वह जीवन के सभी हिस्सों और तालीम व प्रशिक्षण के सभी साधनों पर हावी है। आपको मालूम है कि पुरानी हुकूमत प्राइवेट मामलों में दख़ल नहीं देती थी। ज़ाति मिल्कियतों से उनका कोई संबंध नहीं था। स्वतन्त्र शिक्षण संस्थाओं से उनका कोई सरोकार न था। पर्सनल लॉ से उनकी कोई दुश्मनी न थी। शिक्षा में किसी विशेष आस्था, किसी विशेष सोच व उद्देश्य पर उनको ज़िद न थी लेकिन अब यह स्थिति नहीं है।

---

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

मासिक

# अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:१ जनवरी २०१६ ई० वर्ष:७

**संरक्षक:** हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

**निरीक्षक**
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेट्रेट्री– दारे अरफ़ात

**सह सम्पादक**
मौ० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

**सम्पादकीय मण्डल**
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नारवुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

**मुद्रक**
मौ० हसन नदवी

**अनुवादक**
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

## इस अंक में:

नये जाल लाए पुराने शिकारी.............................२
**बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी**

मनुष्य के निर्माण का उद्देश्य.........................३
**हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी**

दुनिया व आख़िरत की सफलता का राज...........५
**मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी**

पवित्र जीवनी– कुरआन करीम की रोशनी में......७
**बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी**

नमाज़ की सुन्नतें...................................९
**मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी**

पश्चिम की शिक्षा व्यवस्था...........................११
**मौलाना मुहम्मद इलियास घुम्मन**

सेना के प्रशिक्षण में आप स०अ० की.............१३
**जनाब मुहम्मद असद**

मदरसा बोर्ड?.............................................१५
**मुहम्मद सिबग़तउल्लाह नदवी**

गुस्ताख़–ए–रसूल की सज़ा.........................१७
**मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी**

आख़िरत की खेती......................................१८
**मुहम्मद नजमुद्दीन नदवी**

मुस्लिम देशों की सैन्य एकता.......................१९
**मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी**

**सम्पादक: बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी**

**मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी०.229001**

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

# नये जाल लाए पुराने शिकारी

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

आईएस आईएस के नाम से जो हव्वा खड़ा किया गया था, अमरीका व यूरोप को उसकी ख़ासी सफलता प्राप्त हुई है। ताज़ा ख़बरों से यह बात साफ़–साफ़ सामने आ रही है कि अमरीका में इस्लाम और मुसलमान से लोगों की दुश्मनी कई गुना बढ़ गयी। फ़्रांस में न जाने कितनी मस्जिदें इसकी ज़द में आ गयीं और बहुत से नासमझों ने यहां तक कह डाला कि इस्लाम कोई धर्म नहीं, बल्कि केवल आतंक फैलाने का एक नज़रिया है। इस्लाम की दुश्मन ताक़तों का उद्देश्य केवल यही था कि इस्लाम की ओर सारी दुनिया में जो कोशिश बढ़ रही है और इस्लाम के आचार–व्यवहार की व्यवस्था से दुनिया जिस प्रकार प्रभावित हो रही है और उसके परिणाम में इस्लाम में प्रवेश करने वालों की संख्या में एक बढ़ोत्तरी नज़र आ रही थी, उस पर रोक लगा दी जाए। ताज़ा ख़बरों के अनुसार इस्लाम दुश्मन ताक़तों को इसमें बड़ी हद तक सफलता प्राप्त हुई है और दुनिया के विभिन्न देशों में दिमागों को भ्रमित करने का काम इसके द्वारा बड़ी हद तक अंजाम पाया है।

पर्दे के पीछे से आईएस आईएस की मदद करने वाले कौन लोग हैं। गहराई तक जाने वाले इसका अनुभव कर रहे हैं कि इसको पौधे को कहां से पानी मिलता रहा है। अब जबकि हालात बदल चुके हैं और आईएस आईएस से जो काम अमरीका व यूरोप को लेना था वह ले चुका है तो अब उसके विरुद्ध इस्लामी देशों का संगठन बनाया गया है और तथाकथित आईएस के मुक़ाबले के लिए भी "इस्लामी सैन्य संगठन" का नाम सामने लाया गया है ताकि दुनिया के सामने मुसलमानों की आपसी लड़ाइयां साफ़ तौर पर प्रकट की जाएं और मुसलमानों को मुसलमानों के हाथों मरवाया जाए कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। देखने वाले देख रहे हैं कि मारने वाला कौन है? मरने वाला कौन है?किस तलवार से ख़ून टपक रहा है, मगर यह कौन जाने कि तलवार किसने थमाई है?गोली चलाने वाला कौन है?जो किसी के कांधे का इस्तेमाल करके अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मानवता का ख़ून कर रहा है और इस चाबुक दस्ती के साथ कि

ख़ंजर पे कोई दाग़ न दामन पे कोई छींट  तुम क़त्ल करो हो कि करामात करो हो

बहरहाल दुश्मन दुश्मन है उसका काम तो वही दुश्मनी है। अफ़सोस अपने सीधे–सादे लोगों पर है जो बेचारे इस्तेमाल होते जा रहे हैं और अक्सर दीन समझकर बहुत सारे वे काम कर बैठते हैं जो कि इस्लाम की दुश्मन ताक़तों के उद्देश्यों को पूरा करते हैं या उसको ताक़त पहुंचाते हैं।

इस देश में भी यहूदी ताक़तों ने सर उठाना शुरू किया है। वे यहां भी मुसलमानों के आपस के झगड़े बढ़वाकर एक ओर तो उन्हें आपस में लड़वाना चाहते हैं तो दूसरी ओर ऐसी चालें भी चल रहे हैं कि मुसलमानों को भड़काया जाए और वे कोई संजीदा और ठोस क़दम उठाने के बजाए केवल नारों और प्रदर्शनों में उलझ कर रह जाएं। और उनको इस्लाम व मुसलमान की उन्नति कि लिए और दुनिया को सही पैग़ाम पहुंचाने के लिए न समय मिल सके और न उनका दिमाग़ इस बारे में काम कर सके।

सारी दुनिया के इस परिदृश्य को देखकर यह निर्णय हमस ब मुसलमानों को लेना पड़ेगा कि सब को मिलकर इस क्रम में ठोस क़दम उठाने की आवश्यकता है। इस्लाम की वास्तविकता को समझकर सीरत पाक की रोशनी में एक ओर अपनी ज़िन्दगियों को इस ओर लाने की आवश्यकता है जो अल्लाह के रसूल स0अ0 ने इस उम्मत के लिए तय किया है। और इसी प्रकार सामूहिक जीवन में वैसे ही बदलाव लाने की आवश्यकता है जो पवित्र जीवनी की रोशनी में हो। जिसमें मानवता हो, हमदर्दी व मुहब्बत हो, ग़म बांटने की भावना हो, कमज़ोरों के काम आने का वह मुबारक काम हो जो पूरी दुनिया की आवश्यकता है और यही केवल एक हल है दुनिया के सामने इस्लाम का बेहतरीन नमूना पेश करने का कि एक एक मुसलमान तय करे कि हमें इस्लाम का नमूना अपनाना है। हालात जो भी आएं, कुछ सब्र करते हुए अल्लाह के रसूल स0अ0 की मुबारक ज़िन्दगी की रोशनी में आगे बढ़ना है। जो तरीक़ा सहाबा किराम रज़ि0 ने अपनाया और जिसके नतीजे में सारी दुनिया न केवल यह कि इस्लाम से परिचित हुई बल्कि वह इस्लाम की गोद में आ गयी। क्षणिक समस्याओं से हटकर गंभीरता के साथ सोचने की आवश्यकता है ताकि वही इतिहास दोहराया जा सके जो मानवता के लिए बहुत ही हसीन था, जहां एक कमज़ोर और बूढ़ी और सर पर सामान लेकर एक देश से दूसरे देश चली जाती लेकिन कोई उसकी ओर ग़लत निगाह डालने वाला भी न होता, यही मुसलमानों की सफलता का राज़ था और आज भी बन्द तालों को खोलने की यही चाभी है।

# मनुष्य के निर्माण का उद्देश्य

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

कुरआन मजीद में मुसलमानों को जीवन के विभिन्न पहलुओं में सही मुसलमान बनने हेतु चेताया गया है। अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै0 को पैदा किया तो यूं ही तफ़रीह या केवल एक दिलचस्पी के लिए नहीं पैदा किया, अपितु उद्देश्य के साथ पैदा किया और उनकी महानता फ़रिश्तों के समझ प्रकट कर दी। और उनको यह जताया कि हम ऐसा प्राणी पैदा कर रहे हैं जो सभी प्राणियों से श्रेष्ठ होगा। हालांकि अल्लाह की इबादत और उसकी इताअत में फ़रिश्तों से अधिक किसको श्रेष्ठता प्राप्त होगी?वे तो सम्पूर्ण इबादत है, वे गुनाह से परिचित ही नहीं हैं, गुनाह करना तो दूर की बात है, वे केवल ख़ुदा के इरादों, उसके आदेश पर सबकुछ करते हैं। उसी के अधीन हैं। उनसे अधिक कौन इबादत करने वाला होगा? लेकिन उनकी उपस्थिति में अल्लाह तआला ने मनुष्य को पैदा किया और दूसरे प्राणियों पर इसको वरीयता दी, और मनुष्य के लिए पूरे संसार का निर्माण किया। दुनिया में जो उसने चीज़ें रखीं वे मनुष्य के लिए रखीं। यहां तक कि चांद व सूरज की गरदिश भी मनुष्य के लिए ही है। अल्लाह ने इसका उल्लेख तसख़ीर (निर्माण) नामक शब्द से किया है कि हमने तुम्हारे लिए चांद और सूरज का निर्माण किया। यह सब चीज़ें तुम्हारे लिए निर्मित कीं। यह सारे जीव जन्तु मनुष्य के लिए पैदा किए गए हैं। यूं नहीं है कि एक प्राणी यह पैदा कर दिया गया है दूसरा प्राणी यह पैदा कर दिया गया है, जहां बहुत से प्राणी पैदा किए गए वहीं एक प्राणी मनुष्य भी पैदा कर दिया गया है। बल्कि वास्तविकता यह है कि मनुष्य को केन्द्रीय महत्व दिया गया है और उन सारे प्राणियों को मनुष्य के अधीन बनाया गया है ताकि यह उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें और अल्लाह ने ज़मीन के अन्दर उन सारी चीज़ों के भण्डार रख दिये जिसकी मनुष्य को आवश्यकता पड़ सकती है। अतः वैज्ञानिक बार–बार स्वीकार करते रहते हैं कि अमुक वस्तु निकली, अमुक शक्ति का पता चला, अमुक का यह लाभ ज्ञात हुआ, तो वे उसको केवल पता कर लेते हैं, लेकिन उन चीज़ों को पैदा नहीं करते, इसी कारण उनकी यह स्वीकृति तभी संभव है जब कोई वस्तु विघमान हो।

इस संसार में अल्लाह तआला की बनायी हुई यह व्यवस्था है कि मनुष्य की जो कुछ आवश्यकतांए हो सकती हैं, उसकी सेहत, उसके शेष रहने के लिए और उसकी शक्ति को बनाए रखने के लिए और उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जिन चीज़ों की आवश्यकता है अल्लाह तआला ने उन सभी चीज़ों को पहले ही से इस ज़मीन के अन्दर रख दिया है। क्योंकि एक मनुष्य की आवश्यकता को उसके पालनहार से अधिक कौन जान सकता है। उसी ने सबको बनाया है और मनुष्य को भी बनाया है तो मनुष्य की हर चीज़ अल्लाह के ज्ञान में है। इसीलिए उसने मनुष्य की आवश्यकता की हर चीज़ को ज़मीन के अन्दर सुरक्षित कर दिया है। मनुष्य उन चीज़ों से समय–समय पर लाभान्वित होता रहता है। लेकिन विचार करने की बात यह है कि यह सब यूं ही तफ़रीह में नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला को एक ऐसा प्राणी पैदा करना था जिससे वह इस संसार में काम ले, उससे वह कर्तव्य पूर्ण कराए जो एक सही श्रेष्ठ जीवन का कर्तव्य है। जिसकी मूलभूत बात मनुष्य का अपने मालिक को पहचानना और उसका आभारी होना है। उसके आभार प्रकट करने का तरीक़ा अपनाना है और एक अच्छा नेक इनसान बनना है। इनसान होने की हैसियत से बेहतर से बेहतर इनसान बनना है। यह भी कुदरत का कमाल है कि

उसने मनुष्य के स्वभाव में वही सारी विशेषताएं रख दी हैं जो उसको बेहतर बनाने के लिए उपयोगी हो सकती हैं और उनके द्वारा इनसान बेहतर से बेहतर इनसान बन सकता है। फ़रिश्तों से भी आगे निकल सकता है। इसलिए कि वह वे सेवाएं प्रदान करता है जो दूसरे प्राणी नहीं दे सकते हैं क्योंकि जमीन के प्राणी केवल मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करने के लिए हैं। उनका अपना कोई उद्देश्य नहीं। उनके से कई सवारी के लिए हैं, कई गोश्त के लिए हैं, कई ऊन के लिए हैं और जो भी उनसे लाभ होने वाले हैं उनके लिए हैं, इसका भी ज़्यादा ज्ञान अल्लाह ही के पास है।

अल्लाह तआला ने इनसान को फ़रिश्तों की तुलना में जिस चीज़ पर विशेषता व श्रेष्ठता प्रदान की है वह ज्ञान है। अल्लाह तआला ने मनुष्य को ज्ञान प्रदान किया है, उसकी विशेषता दी है और फ़रिश्तों से बताया कि यह उनकी विशेषता है। और यह इसलिए बताया कि फ़रिश्तों को एक नया प्राणी बनाए जाने पर आश्चर्य हो रहा था, फ़रिश्तों ने कहा था, हम सब आपकी इबादत करते हैं, ये नये प्राणी क्या करेंगे, उनका क्या काम होगा? इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमायाः तुम नहीं जानते। ज्ञान की विशेषता का अर्थ यह है कि ज्ञान प्राप्त किया जाए और उससे काम लिया जाए। इसका तरीक़ा भी अल्लाह ने इनसान को सिखा दिया। उसके स्वभाव व प्रकृति में यह योग्यता रख दी कि ज्ञान प्राप्त करे और उससे फ़ायदा उठाए और इसी आधार पर उसको अपनाने की योग्यता भी प्रदान की। जिसका अर्थ यह है कि मनुष्य ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करेगा और ज्ञान को प्रयोग करने का कार्य भी करेगा और यदि अधिकार न होता तो यह कार्य भी कर पाना कठिन होता इसलिए कि यदि अधिकार न होता तो अल्लाह जो चाहता मनुष्य करता चला जाता। इसीलिए मनुष्य को अल्लाह ने अधिकार दिया और यही अधिकार मनुष्य के लिए बहुत बड़ा कर्तव्य बन गया। कुरआन मजीद में इसी कर्तव्य की ओर संकेत दिया गया है कि अल्लाह तआला ने उसको ज़मीन व आसमान और पहाड़ों के सामने रखा कि क्या तुम इस कर्तव्य का निर्वाहन कर सकते हो? पहाड़ों ने जवाब दियाः हमारे बस का नहीं है। लेकिन जब मनुष्य को इस बारे में कहा गया तो उसने कहा कि हम उठा लेंगे, क्योंकि मनुष्य में अल्लाह ने वह विशेषताएं रखी हैं जिनसे वह इस कर्तव्य का निर्वाहन कर सकता है। किन्तु मनुष्य का यह कहना है कि "इस कर्तव्य का निर्वाह कर लेंगे" यह कुछ जल्दबाज़ी थी, इसीलिए अल्लाह तआला ने उसको "ज़ालिम और जाहिल" के शब्द की संज्ञा दी। यानि मनुष्य जल्दी बेक़ाबू हो जाता है और जल्दी फ़ैसला कर देता है। क्योंकि यह ज़िम्मेदारी ऐसी चीज़ थी कि जिसको उठाने से पहाड़ों ने इनकार कर दिया किन्तु मनुष्य ने हामी भर दी। लेकिन जब इस ज़िम्मेदारी को उठाने के लिए "हां" कर दी है तो हमारा कर्तव्य यह है कि इसको निभाएं और वह इस प्रकार कि हम एक नेक इनसान बन कर दिखाएं। अल्लाह की मर्ज़ी को लागू करें। अच्छी विशेषताएं अपनाएं, अच्छे कार्य करें, और अल्लाह तआला के विद्यान को लागू करें, जिसका अल्लाह तआला ने नबियों के द्वारा स्पष्ट भी किया है।

ध्यान रहे कि अल्लाह तआला ने मनुष्य को जो ज़िम्मेदारी दी है, उसको जो आदेश दिए हैं, वे सब वह हैं जिनको वह कर सकता है, न कर पाने वाले आदेश नहीं दिए हैं। इसी प्रकार यह भी मालूम होना चाहिए कि अल्लाह तआला को इस बात की स्वयं कोई आवश्यकता नहीं है कि इनसान नेक बने। इनसान नेक बने या बुरा बने उसमें अल्लाह का कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि उसको उन चीज़ों की कोई ज़रूरत नहीं है, उसके तो अनगिनत प्राणी हैं, फ़रिश्तों की अनगिनत संख्या है, सब उसकी उपासना में लगे हुए हैं, कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो अल्लाह की इबादत में न लगी हो। जीव–जन्तु सब अल्लाह की इबादत में लगे हुए हैं। यद्यपि उनकी उपासना के तरीक़े अलग हैं और हमारा तरीक़ा अलग है। इनसानों के लिए भी अल्लाह ने विभिन्न तरीक़े रखे। बनी इस्राईल की इबादत का तरीक़ा दूसरा था, उनसे पहले की क़ौमों का अलग था, किसी के यहां केवल क़याम (खड़े होना) था, किसी के यहां सजदा था, लेकिन इस उम्मत के लिए अल्लाह ने ऐसा क़ानून प्रदान किया जो व्यापक क़ानून है।

.....(शेष पेज 16 पर)

# दुनिया व आख़िरत की सफ़लता का राज़

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह तआला उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जिसने मेरी बात सुनी और उसे (बग़ैर किसी कमी या ज़्यादती के) दूसरों तक पहुंचाया, तीन बातें ऐसी हैं कि (उनके होते हुए) मुसलमान का दिल फ़रेब नहीं खाताः

1. अमल को अल्लाह के लिए ख़ालिस करना।

2. मुसलमानों के मार्गदर्शकों के साथ भलाई का सुलूक करना।

3. मोमिनों की जमाअत से अलग न होना।

क्योंकि उनकी दुआएं उन लोगों को भी अपने दामन में ले लेती हैं जो उनके पीछे होते हैं। जिस शख़्स का मक़सद व नियत केवल दुनिया होगी, अल्लाह तआला भूख का डर उस पर डाल देगा। उसकी जाएगदाद को परागन्दा कर देगा और मिलेगा उसे उतना ही जितना उसके नसीब में है। और जिस व्यक्ति का उद्देश्य आख़िरत होगा अल्लाह तआला उसके दिल को ग़नी कर देगा और उसकी जाएदाद की देखभाल करेगा और दुनिया अपमानित होकर उसके क़दमों पर गिरेगी।

इस हदीस में आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआला रहम फ़रमाए उस शख़्स पर जो मेरी बात सुने और दूसरों तक पहुंचाए। ऐसे पहुंचाने वाले शख़्स को रसूल पाक स0अ0 की बड़ी दुआएं हैं, एक रिवायत में आप स0अ0 ने दुआ दी कि अल्लाह उस शख़्स को सरसब्ज़ शादाब रखे जो मेरी हदीस सुनकर उसको याद कर ले और उसको दूसरों तक पहुंचाए उसी तरह जिस तरह सुना था। दुआ की यही तासीर है कि हदीस शरीफ़ से संबंध रखने वाले चेहरों को अगर देखा जाए तो उनके चेहरों पर बड़ा नूर होता है।

ग़रज़ यह कि अल्लाह के रसूल स0अ0 ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें ऐसी हैं कि अगर इनसान उनको अपने अन्दर पैदा कर ले और उसके लिए कोशिश करे तो फिर उसका दिल मैल से पाक हो जाएगा लेकिन चूंकि आम तौर पर तीनों चीज़ों की पाबन्दी नहीं होती है इसीलिए यह मैल कभी कभी इनसान को ग़लत चीज़ों पर आमादा करता है और फिर इसी मैल की कोख से हसद, कीना, बुग़्ज़, तहक़ीर, तकब्बुर, घमन्ड, अजब जैसी बहुत सी बीमारिया पैदा होती हैं। लेकिन अगर हदीस में दी गयी तीनों चीज़ों की पाबन्दी की जाए तो उससे बचना मुमकिन होगा।

1. इनसान का अपने हर काम को अल्लाह के लिए ख़ालिस करना कि जो भी कुछ करे वह अल्लाह ही के लिए करे और हर काम की शुरूआत से पहले अपनी नियत को चेक कर ले कि ठीक है या नहीं?आम तौर पर लोग तो जब दुनिया की मशीनों को चलाते हं। तो चेक कर लेते हैं कि अन्दर से ठीक है या नहीं, अगर ठीक होती है तो काम आगे बढ़ाया जाता है वरना पहले उसके अन्दर के पुर्ज़ों को ठीक किया जाता है। इसी तरह हमारी सबसे पहली ज़िम्मेदारी यह है कि हम हर काम से पहले अपने मन का जाएज़ा लें कि नियत ठीक है या नहीं?

हज़रत मौलाना रह0 का इस बारे में अनुसरण योग्य नमूना है। आप जहां भी दीनी काम से तश्रीफ़ ले जाते तो सबसे पहले अपनी नियत को चेक कर लेते कि ठीक है या नहीं, तब तश्रीफ़ ले जाते, इसीलिए हज़रत मौलाना रह0 का मामला हर जगह सही रहता था और अल्लाह उनसे बड़ी–बड़ी बातें अदा कराता था लेकिन चूंकि हम लोग अपनी नियत ठीक नहीं करते हैं इसलिए मामला बिगड़ जाता है। लिहाज़ा पहले हर जगह हर मामले में नियत घर ही से ठीक करके अल्लाह को राज़ी करने का मक़सद बनाकर निकलना चाहिए। तो फिर आगे उसका अच्छा नतीजा दुनिया व आख़िर में सामने आएगा। यहां तक कि हम जिस क़दर नियत ठीक करते जाएंगे उतना ही हमारा मामला अच्छा होता चला जाएगा।

2. दूसरी बात यह फ़रमायी कि जो इस्लाम के जिम्मेदार लोग हैं उनके साथ भलाई का मामला किया जाए, क्योंकि भलाई बहुत अहम चीज़ है। भलाई का मतलब यह है कि हर इनसान दूसरे इनसान के लिए हर वक़्त भला चाहे, क्योंकि जब आदमी किसी के लिए भला चाहता है तो फिर अच्छा मामला करता है।

लेकिन इस भलाई के बहुत से दर्जे हैं, मुख़्तसर में भलाई का मतलब यह समझा जा सकता है कि इनसान जिस जगह महल के एतबार से जिस चीज़ को लोगों के हक़ में मुनासिब समझे और उसको अंजाम दे, जैसेः कहीं किसी को किसी चीज़ से रोकना ज़रूरी है तो रोक कर

भलाई करे, कोई तुम्हारे देखने ही से ख़ुश होता है तो उसकी तरफ़ अच्छी निगाह से देख ले। किसी के घर जाने से उसकी हिम्मत बढ़ सकती हो तो चला जाए, इत्यादि। मानो कि जहां भी जैसी ज़रूरत आए, वैसा किया जाए, यह भलाई है।

लेकिन आजकल एक चीज़ और चल पड़ी है, वह है मिस गाइड, जो कि भलाई के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। यानि कोई मजबूर या भटका हुआ इनसान अगर किसी से आज के ज़माने में रास्ता मालूम करता है तो आजकल के नवजवान उसको उल्टा रास्ता बताकर ख़ुश होते हैं ताकि वह व्यक्ति परेशान होकर फिर दोबारा इधर–उधर मालूम करता रहे। यह बड़े ख़तरे की बात है जो कि भलाई के बिल्कुल ख़िलाफ़ है।

3. तीसरे यह कि हर मुसलमान को मुसलमानों की जमाअत से साथ जुड़ा रहना चाहिए। जमाअतों, पार्टियों और बिरादरियों में बंटना नहीं चाहिए बल्कि तमाम मुसलमानों को एक जमाअत बनकर रहना चाहिए। लेकिन अगर कोई मुसलामानों में भी अलग–अलग जमाअतें पैदा करता है तो यह चीज़ बिल्कुल ग़ैर इस्लामी है। इसका इस्लाम से कोई संबंध नही हैं। क्योंकि इस्लाम में जमाअत सिर्फ़ एक है और वह है ''मुसलमानों की जमाअत'' इसके अलावा सहाबा के ज़माने से लेकर आज तक किसी जमाअत का सुबूत नहीं है। इसीलिए हमारे हज़रत मौलाना इलियास साहब रह0 ने बार बार यह कहा है कि ''देखो इस काम को जमाअत मत बनाना'' क्योंकि यह जमाअत (संगठन) का तसव्वुर बिल्कुल ग़लत है और अगर किसी के दिमाग़ में इसका ख़्याल आ जाता है तो फिर उस व्यक्ति का इस्लाम से कोई संबंध ही नहीं रहता, लिहाज़ा हर मुसलमान जमाअत में शामिल है। चाहे जो मुसलमान हो, जैसा भी हो, काला हो या गोरा हो, लंगड़ा हो या लूला हो, चाहे जैसा भी लेकिन अगर मुसलमान है तो वह मुसलमानों की जमाअत में शामिल है और अल्लाह का हाथ जमाअत पर है। सभी मुसलमानों को जमाअत के साथ रहने में यह भी फ़ायदा है कि जब एक साथ रहेंगे तो सबकी दुआंए एक–दूसरे के साथ रहेंगी।

इन तीनों बिन्दुओं के बयान के बाद हदीस शरीफ़ में फ़रमाया गया कि जिसकी नियत दुनिया की होती है यानि उसके दिल का संबंध दुनिया से गहरा होता है, यहां तक कि जो भी काम करता है तो दुनिया के लिए ही करता है, तो ऐसे शख़्स के लिए अल्लाह फ़क़्र व फ़ाक़ा का डर खड़ा कर देता है और वह हर समय इसी सोच में रहता है कि किसी तरह से दुनियो से उसे ज़्यादा से ज़्यादा हासिल हो जाए, हालांकि दुनिया को तो सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़ हलाल कमाई के साथ हासिल करना चाहिए। मालूम यह हुआ कि इस तरह की दुनिया तलबी वाली नियत मतलूब व मक़सूद नहीं, इसीलिए रसूलुल्लाह स0अ0 ने इसकी तरफ़ इशारा भी फ़रमा दिया क्योंकि हक़ीक़त यह है कि सारे काम अल्लाह के हाथ में है, अगर उसकी मर्ज़ी शामिल है तो कम में भी बरकत हो जाएगी, वरना ज़्यादा होकर भी बहुत नहीं हो सकता है। अतः जो अल्लाह से संबंध रखेगा उसका काम यक़ीनन बन जाएगा और जिनका काम हज़ार कोशिशों के बावजूद भी नहीं बन रहा है उसका राज़ यही है कि उन्होंने अल्लाह को अस्ल राज़िक़ नहीं समझा है।

आख़िर में फ़रमाया कि जो आख़िरत को सामने रखता है तो फिर अल्लाह तआल उसके दिल को ग़नी कर देता है और उसका हर काम भी बन जाता है। यहां तक कि दुनिया उसके क़दमों में नाक रगड़कर आती है। हालांकि पहले वाले व्यक्ति के बारे में यह बताया कि जो सिर्फ़ दुनिया ही की तलब में रहता है तो फिर दुनिया उसको उतनी ही मिलती है जितना उसका मुक़द्दर है लेकिन यहां यह हाल है कि दुनिया उसके क़दमों में आती है उसके जूतों में आती है।

एक बार हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह0 के पास एक साहब तोहफ़ा लेकर आए। मौलाना ने क़ुबूल करने से मना कर दिया, उसने बहुत कहा भी, लेकिन मौलाना ने उसे क़ुबूल नहीं किया बाद में वह बन्दा उस तोहफ़े को मौलाना की जूतियों पर रख गया, बाद में जब मौलाना ने जूता पहना तो उन्हें महसूस हुआ कि जूतियों में कुछ रखा है तो मौलाना ने जूता झाड़ने के लिए जब हाथ उठाया तो कि वही तोहफ़ा है जो वह आदमी दे रहा था और उन्होंने क़ुबूल नहीं किया था, जूते में रखा हुआ है, मौलाना ने फ़रमायाः इसीलिए हदीस में आता है कि अगर तुम दुनिया को छोडोगे तो दुनिया नाक रगड़ते हुए तुम्हारे क़दमों में आएगी, लिहाज़ा आज देखा जा सकता है कि अल्लाह ने दुनिया को मेरे जूतों के अन्दर पहुंचा दिया है। लेकिन जो लोग इसके पीछे पड़े रहते हैं तो फिर वह आगे–आगे भागती है और इसी तरह पूरी ज़िन्दगी गुज़र जाती है। लेकिन दुनिया उसकी पकड़ में नहीं आती है। लेकिन अगर कोई दुनिया के पीछे न भागे तो यह भी एक वास्तविकता है कि फिर दुनिया उसके क़दमों में स्वयं ही आ जाती है।

# पवित्र जीवनी

## कुरआन करीम के आइने में

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

नबी करीम स0अ0 की पैरवी ईमान की पहचान है और आप स0अ0 के जीवन का बेहतरीन नमूना हम सबके लिए रोशनी का मीनार है। हर ईमानवाले पर यह अनिवार्य है कि वह हर हाल में आप स0अ0 की बात माने, आप स0अ की पैरवी करे, और अपने दिल व दिमाग़ को उन पवित्र आदेशों के लिए ऐसा ढाल ले कि चाहे कितना ही नुक़सान नज़र आता हो, दुनिया की दौलत व इज़्ज़त जाती हुई नज़र आती हो। लेकिन रसूलुल्लाह स0अ0 के फ़रमान के आगे हर चीज़ कमतर हो। और जब भी आप स0अ0 का आदेश सामने आ जाए उसको स्वीकार करते हुए सर झुका देना चाहिए। और दिल व दिमाग़ को उस पर पूरी तरह से संतुष्ट कर लेना चाहिए। अल्लाह तआला का इरशाद हैः "बस नहीं आपके रब की क़सम वे उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक वे अपने झगड़ों में आपको फ़ैसला करने वाला न बना लें फिर आपके फ़ैसले पर अपने जी में कोई तंगी महसूस न करें और पूरी तरह से सर को झुका दें।" (सूरह निसाः 65)

आपका हर फ़ैसला वास्तव में अल्लाह का फ़ैसला है। आपको आदेश दिया जा रहा है किः "और आप तो उनके बीच जो अल्लाह ने उतारा है उसके अनुसार ही निर्णय करते रहिए।" (सूरह माइदाः 49)

विभिन्न अवसर ऐसे आएं हैं कि मक्का के मुश्रिकों ने और फिर मुनाफ़िक़ों ने चाहा कि वे आप स0अ0 से अपनी इच्छानुसार निर्णय कराएं, मगर अल्लाह ने अपने नबी स0अ0 को वही के द्वारा वास्तविकता बता दी और लोगों की तेज़ ज़बान उनके काम न आ सकी।

आप स0अ0 अपने पवित्र जीवन में स्वयं निर्णय करते थे और उसको मानना और उसको पर अमल करना, सुनने वालों पर अनिवार्य था। यदि कोई उससे हटता तो यह उसके निफ़ाक़ व कपट की खुली पहचान समझी जाती थी। अल्लाह तआला ने आप स0अ0 के कथनों को निर्णायक घोषित कर दिया, और उन पर अमल करना अनिवार्य कर दिया। इस आयत में बड़ी ताकीद के साथ क़सम खाकर यह बात कही जा रही हैः "बस हरगिज़ नहीं, उनके रब की क़सम वे मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि अपने झगड़ों में आप से फ़ैसला न कराएं।"

आयत का शान–ए–नुज़ूल जो भी हो इस में जो आदेश दिया जा रहा है वह हर व्यक्ति के लिए है और क़यामत तक के लिए है। आप स0अ0 की पवित्र जीवनी, आपके कथन, आपकी सुन्नतें निर्णायक हैं, उनके अनुसार कार्य करना हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है।

सामूहिक जीवन में मतभेद होना आम बात है। स्वभाव का अलगाव, विचारों का अलगाव होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, लेकिन उसमें जब दौलत व इज़्ज़त की हवस अपनी जगह बना लेती है तो झगड़े बढ़ते हैं, बात गाली–गलौज तक व कभी–कभी लूटपाट व हत्या तक पहुंच जाती है। जबकि हदीस में है कि ''मोमिन को गाली देना गुनाह की बात है और उसकी हत्या करना कुफ़्र है'' इसके बावजूद अच्छे–अच्छे दीनदारों में यह बुराई पैदा हो जाती है और कभी दीन का लेबल लगाकर यह सब काम किए जाते हैं और अपनी बात सच साबित की जाती है। और कुछ ऐसे भी नाफ़रमान होते हैं जो खुलेआम शरीअत की नाफ़रमानी करते हैं और अपनी दौलत व इज़्ज़त को बढ़ाने के लिए हर प्रकार के सच, झूठ का सहारा लेते हैं और दूसरों की इज़्ज़त लेना चाहते हैं या दुनिया पाने के लिए दूसरों का हक़ मारते हैं, और लड़ते–झगड़ते हैं।

उपरोक्त आयत में हर प्रकार के लोगों को नसीहत की जा रही है कि जब भी झगड़े पैदा हों तो इसका निर्णय आप स0अ0 ही करेंगे। आप स0अ0 की जीवनी निर्णायक होगी। जो क़यामत तक ज़िन्दा रहेगी। आप स0अ0 का हर तरीक़ा, कथन व शिक्षा ज़िन्दा है और क़यामत तक के लिए अल्लाह ने उसकी सुरक्षा का निर्णय कर दिया है। वह सबके लिए मार्गदर्शक व निर्णायक है। हर समस्या में चाहे वह छोटी हो या बड़ी, व्यक्तिगत हो या सामूहिक,

उसका संबंध घरेलू झगड़ों से हो या घर के बाहर के सामाजिक मतभेदों से जो झगड़े तक पहुंच जाते हैं। उन सभी समस्याओं में निर्णय आप स0अ0 का ही चलेगा। यही ईमान की पहचान है। और निसंदेह आप स0अ0 के दुनिया से जाने के बाद आप स0अ0 की पवित्र जीवनी, आपकी सुन्नत, आपके कथन व शिक्षाएं ही निर्णायक हैं। यद्यपि आवश्यकता इस बात की है कि अपने स्वभाव व सोच को आप स0अ0 के स्वभाव व सोच में और आप स0अ0 के तरीक़े में ढाला जाए और आप स0अ0 की जीवनी का इस प्रकार से अध्ययन किया जाए कि इसका कोई भाग शेष न रहे। और उसके प्रकाश में अपने झगड़ो का निपटारा किया जाए वरना ईमान का केवल दावा करना पर्याप्त नहीं। अल्लाह तआला ने बात बिल्कुल साफ़ कर दी कि जब तक आप स0अ0 के आदेशों और निर्णय पर पूरी संतुष्टि न हो जाए उस समय तक ईमान संदेहास्पद है, केवल ज़बान से कह देना काफ़ी नहीं। बल्कि इसके लिए झुक जाना, सर को झुका देना और इस पर संतुष्ट हो जाना आवश्यक है।

एक दूसरी आयत में बात और स्पष्ट कर दी गयी कि एक ईमान वाला मर्द हो या औरत व अपना अख़्तियार अल्लाह के रसूल के हवाले कर चुका, अब ख़ुद उसको कोई अधिकार बाक़ी नहीं रहा, जो भी अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म हो उसके अनुसार हर हाल में अमल करना है, वरना जो नाफ़रमानी पर आमादा हो जाता है तो उसको सख़्त गुमराह कहा गया है। इरशाद होता है: "और जब अल्लाह और उसके रसूल किसी मामले में फ़ैसला कर दें तो फिर किसी मोमिन मर्द या मोमिन औरत के लिए गुंजाइश नहीं कि वे अपने मामले में अधिकार रखते हैं और जिसने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की तो वह खुली गुमराही में पड़ गया।"

ममला अक़ीदे का हो, इबादत का हो, मामलों का हो या समाज का हो, शादी ब्याह का हो, ख़ुशी का हो, या ग़मी का, हर मसले में रुजूअ करना होगा और आप स0अ0 के आदेशों को देखना होगा और उसके अनुसार अपने आप को ढालना होगा। मन की इच्छा एक ओर, तरीक़ा व आदत और रस्मो रिवाज एक ओर, लेकिन जब भी सामने अल्लाह के रसूल स0अ0 का आदेश आ जाए, यह है ईमान की मांग बल्कि ईमान की पहचान। ज़ाहिर में कितना ही नुक़सान नज़र आता हो, मगर होगा वही जो आप स0अ0 का फ़रमान हो, जब ज़िन्दगी में यह रंग आ जाएगा तो ईमान मज़बूत हो जाएगा, फिर कोई उसकी बोली नहीं लगा सकता, यही हर मुसलमान की शान है और यही उसकी पहचान है, और यही अल्लाह का फ़रमान है।

**मुहब्बत**

इताअत से मुहब्बत पैदा होती है और मुहब्बत की मांग इताअत की शक्ल में ज़ाहिर होती है। अरबी शायर कहता है: यक़ीनन चाहने वाला अपने महबूब की इताअत करता है।

हर व्यक्ति समझता है और बार–बार इसका अनुभव करता है कि जब किसी की मुहब्बत उसके दिल में घर बना लेती है तो उसकी एक–एक अदा अच्छी लगती है और उस पर सौ बार जान कुर्बान करने को जी चाहता है, फिर अक़्ल को अकेले छोड़ दिया जाता है और लगाम इश्क़ के हाथ में आ जाती है।

मुहब्बत हर दिल की मांग है। जिस दिल में प्रेमभावना न हो वह दिल वास्तव में दिल कहलाने योग्य नहीं है। लेकिन इस मुहब्बत का केन्द्र कौन हो?"और जो लोग ईमान लाए वे अल्लाह ही से सबसे ज़्यादा मुहब्बत रखने वाले हैं" (सूरह बक़राः 165) और दूसरी जगह इरशाद फ़रमायाः "नबी का मोमिनों पर उनकी जानों से ज़्यादा हक़ है।" (सूरह एहज़ाबः 6)

इन आयतों में मुहब्बत को ठिकाने लगाने का गुण बता दिया गया है। दिल सबके पास है। यह दिल अगर अल्लाह और उसके रसूल स0अ0 से लग जाए तो दिल को वह महबूब मिल जाए जिसकी मुहब्बत कभी ख़त्म नहीं होती। जिसकी मुहब्बत हर मर्ज़ का इलाज और हर दर्द की दवा है। जो ऐसी हलावत है कि उसकी मिठास पाकर इनसान एक दूसरी दुनिया में पहुंच जाता है। फिर बड़ी से बड़ी बादशाहत उसके आगे बेकार हो जाती है। अल्लाह तआला ने उस हक़ीक़ी मुहब्बत का आदेश दिया है और अपने महबूब स0अ0 के बारे में यह इरशाद किया है कि: जिस नबी के ज़रिए कुरआन मिला, ईमान मिला, मानवता मिली, हया मिली, त्याग मिला, दर्द व मुहब्बत की हक़ीक़त मिली, जिन्होंने जीना भी सिखाया और मरना भी, जिन्होंने मौला की मर्ज़ी बतायी और जन्नत का रास्ता खोला, जो ख़ुद अल्लाह के महबूब, जहानों के सरदार, नबियों के इमाम हैं, जिनके हुस्न के आगे सूरज व चांद कुछ नहीं हैं, मुहब्बत गर उनसे न होगी तो किससे होगी??

# नमाज़ की सुन्नतें

मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी

अस्ल यह है कि नमाज़ बिल्कुल उस तरह पढ़ी जाए जिस तरह रसूलुल्लाह स0अ0 पढ़ा करते थे। इसलिए कि आप स0अ0 ने उसी तरह नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया था। यह न देखा जाए कि इसमें क्या फ़र्ज़ है, क्या वाजिब है, क्या सुन्नत या मुस्तहब है, लेकिन फ़ुक़्हा ने दलीलों की बुनियाद पर कुछ चीज़ों को फ़र्ज़ या वाजिब बताया है जिनकी तफ़सील आ चुकी है और उनको छोड़ने से या तो नमाज़ बिल्कुल होती ही नहीं है या उसका दोहराना वाजिब है जाता है। जबकि कुछ चीज़ों को सुन्नत या मुस्तहब बताया गया है जिनको छोड़ने से ऐसी कोई बात नहीं होती है लेकिन नमाज़ की पूरी बरकतें तभी हासिल होती हैं जब उनका भी पूरे तौर पर एहतिमाम किया जाए। अब नीचे हम सुन्नतों का ज़िक्र करते हैं।

**सुन्नत का हुक्म:** सुन्नत छोड़ने से न तो नमाज़ फ़ासिल होती है, न सजदा सहू वाजिब होता है, लेकिन जानबूझ कर छोड़ा जाय तो गुनाह होता है।

**सुन्नतों की संख्यां:** सुन्नतों की तादाद फ़िक़ की अलग–अलग किताबों में अलग–अलग लिखी हुई है। जैसे रद्दुलमुख़्तार में उनकी संख्या 23 लिखी हुई है, नूरुल ईज़ाह में उनकी संख्या 51 लिखी है, कुछ किताबों में उनकी संख्यां 20 गिनायी गयी है। इस भिन्नता की वजह वही है जो हम वाजिबात के बारे में लिख चुके हैं कि बहुत से लोग कई सुन्नतों को मिलाकर एक बयान करते हैं, बहुत से उनको खोलकर कई सुन्नतें बना देते हैं। उसके अतिरिक्त बहुत से कामों को कुछ उलमा सुन्नत गिनते हैं, जबकि बहुत से उनको मुस्तहब बताते हैं, इसी वहज से सुन्नतों की संख्यां में अन्तर नज़र आता है। लेकिन हक़ीक़त में इसके बारे में कोई अस्ल इख़्तिलाफ़ नहीं है।

नीचे हम 15 सुन्नतों को ज़िक्र कर रहे हैं।

**1. तकबीर तहरीमा के समय हाथ उठाना:**

तकबीरे तहरीमा के समय हाथ उठाना सुन्नत है, फिर मर्दों के लिए सुन्नत यह है कि हाथ कानों की लौ तक उठाए, और औरतों के लिए सुन्नत यह है कि कन्धों तक हाथ उठाए।

इसलिए कि हज़रत मालिक बिन हवीरस की रिवायत में है कि: रसूलुल्लाह स0अ0 जब तकबीरे तहरीमा कहते थे दोनों हाथों को उठाते थे यहां तक कि कानों के बराबर कर लेते थे, और एक रिवायत में है कि कानों के ऊपरी हिस्से के बराबर में कर लेते थे।

और बुख़ारी की एक रिवायत में जो हज़रत अबू हमीद साअदी रज़ि0 की रिवायत है कन्धों तक हाथ उठाने का ज़िक्र है, औरतें जितना कम हाथ उठाएंगी उतना ही उनका सतर ज़्यादा होगा, इसीलिए उनका कन्धों तक हाथ उठाना सुन्नत क़रार दिया गया, जबकि मर्दों के लिए अबूदाऊद की इस रिवायत के मुताबिक़ ततबीक़ दी गयी: "हज़रत वाएल बिन हज्र फ़रमाते हैं कि आप स0अ0 जब नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े होते थे तो दोनों हाथों को इस तरह उठाते थे कि हाथ (कलाइयां) कन्धे के पास होते थे, और अंगूठे कानों के बराबर होते थे।"

**2. रफ़अ यदैन के समय हथेलियों का रुख़ क़िब्ला की तरफ़ रखना:**

तकबीर के लिए हाथ उठाते समय उंगलियों को मोड़ा न जाए, सीधा रखा जाए और एक उंगली को दूसरी उंगली से मिलाया न जाए, न फैलाया जाए बल्कि अपने हाल पर छोड़ दिया जाए। हाथ इस तरह उठाया जाए कि दोनों हथेलियों का रुख़ क़िब्ला की तरफ़ हो जाए, न तो आसमान की तरफ़ उनका रुख़

हो, न चेहरे की तरफ़।

**3. तकबीर का ज़ोर से कहना:**

इमाम के लिए सुन्नत यह है कि तकबीर–ए–तहरीमा (उसी तरह बाद की तकबीरें, समीअल्लाहु लिमन हमिदा और सलाम) इतनी आवाज़ से कहे जिसको मुक़्तदी सुन लें, अगर मुक़्तदी ज़्यादा हों जो जहर भी उसी प्रकार से ज़्यादा करे, कम हो तो बहुत ज़्यादा जहर करना मकरूह है।

जहां तक मुक़्तदी और मुनफ़रिद का संबंध है तो यह सब चीज़ें बहुत धीमी आवाज़ में कहेगा।

**5. हाथ बांधना:**

तकबीरे तहरीमा के बाद सुन्नत यह है कि हाथ बांधे जाएं, इसका सुन्नत तरीक़ा यह है कि दाएं हाथ को बांए हाथ पर अच्छी तरह रखे कि छोटी उंगली और अंगूठे से घेरा बनाकर गट्टे को पकड़ ले और बाक़ी तीन उंगलियों को कलाई पर रख दे। इसलिए बहुत सी हदीसों में दाहिने हाथ को बांए पर रखने का ज़िक्र है, बहुत सी में दाहिने हाथ से बाएं हाथ को पकड़ने का ज़िक्र है। बहुत से में हथेली को हथेली पर रखने का ज़िक्र है। और इस तरह करने में बेहतरीन ततबीक़ हो जाती है और सब हदीसों पर अमल हो जाता है।

जहां तक दोनों हाथों को रखने की जगह का संबंध है तो मर्दों के लिए सुन्नत यह है कि दोनों हाथ नाफ़ के नीचे रखें जैसा कि बहुत सी हदीसों में आया है, और औरतें हाथ का घेरा नहीं बनाएंगी, उनके लिए सुन्नत यह है कि दाहिनी हथेली बायीं हथेली पर अपने सीने के नीचे रखें।

**5. फिर धीरी आवाज़ से पढ़ना सुन्नत है,** सना पढ़ना इमाम, मुक़्तदी और अकेले सबके हक़ में सुन्नत है ओर हनफ़ियों के नज़दीक ''सुब्हान क ल हुम्मा'' पढ़ना सुन्नत है। इसीलिए हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 जब नमाज़ शुरू करते थे तो यह (सना) पढ़ते थे। सना के और भी बहुत से शब्द आए हैं, लेकिन अहनाफ़ के नज़दीक फ़र्ज़ में सिर्फ़ ''सुब्हान क ल हुम्मा'' पढ़ना सुन्नत है, हां नफ़िल नमाज़ों में दूसरे शब्दों वाली सना पढ़ सकता है।

फिर भी यह ध्यान रहे कि अगर इमाम ने किरात शुरू कर दी गयी और नमाज़ जिहरी किरात वाली थी तो अब मुक़्तदी सना नहीं पढ़ेगा ओर अगर नमाज़ सिर्री क़िरात वाली थी तो इमाम ने क़िरात शुरू कर दी हो तो भी राजेह क़ौल के अनुसार सना पढ़ना सुन्नत है।

**6. फिर इमाम इसी तरह** मुनफ़रिद धीरी आवाज़ से ''आउज़बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम'' और ''बिस्मिल्लाहिर्रहमार्रिहीम'' पढ़ेंगे, इन दोनों चीज़ों को चूंकि कुरआन करीम की तिलावत की शुरूआत के लिए पढ़ा जाता है, लिहाज़ा मुक़्तदी तऊज़ व तस्मिया नहीं करेगा।

तऊज़ व तस्मिया चूंकि कुरआन की तिलावत के लिए है, लिहाज़ा इमाम ईदैन की नमाज़ों में इन दोनों को तकबीर के बाद पढ़ेगा, इसलिए क़िरात तकबीर के बाद की जाती है।

**7. फिर जब इमाम जिहरी नमाज़ों** में ''वलज़्ज़ाल्लीन'' कहे तो ख़ुद इमाम और मुक़्तदियों के लिए धीमी आवाज़ से ''आमीन'' कहना सुन्नत है।

इसीलिए हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है, फ़रमाते हैं, नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः ''जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो'', और एक रिवायत में है कि जब इमाम ''वलज़्ज़ाल्लीन'' कहे तो आमीन कहो, इसलिए कि जिसकी आमीन फ़रिश्तों की आमीन के मुआफ़िक़ हो जाए तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं।

**8. रुकूअ में सुन्नत यह है कि दोनों हाथ** की उंगलियों को खुला रखे और दोनों घुटनों को पकड़ ले। यह मर्दों के लिए है। औरतों के लिए सुन्नत यह है कि उंगलियां खोले बग़ैर सिर्फ़ दोनों हाथ घुटने पर रख दें। यह ध्यान रहे कि यहां मर्दों को हाथ की उंगलियां खोलने का आदेश है और सजदे में उंगलियां मिलाने का आदेश है, बक़िया नमाज़ में उंगलियों को अपने हाल पर छोड़ने का हुक्म है।

**9. रुकूअ में कम से कम तीन बार** ''सुब्हान रब्बिल अल अज़ीम'' कहना सुन्नत है।

.....(शेष पेज 12 पर)

# पश्चिम की शिक्षा व्यवस्था और स्त्रियों की समस्याएं

मौलाना मुहम्मद इलियास घुम्मन

रुत ही बदल गयी है, पैमाने बदल गए हैं, अन्दाज़ बदल गया है इसका कारण यह है कि सोच बदल गयी है। मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स0अ0 ने क़यामत की सुबह तक मुसलमानों को दुनिया बेहतर बनाने और आख़िरत संवारने के जो उसूल और क़ानून बताए थे, हम उन उसूलों और क़ानूनों को नज़रअन्दाज़ कर रहे हैं। आप स0अ0 की शिक्षा में केवल आख़िरत ही की नहीं बल्कि दुनिया की भी सफलता निहित है।

इस्लाम केवल कुछ काम अदा कर देने का नाम नहीं है जिसे कुछ समय के लिए अपनाकर उसके दायरे से निकला जाए बल्कि यह उस संग्रहण का नाम है जिसमें एतक़ादात, इबादत, सामाजिकता, सफल जीवन और उज्ववल भविष्य यानि आख़िरत की भलाई और पनाह है। जब तक इस्लाम की रूह को नहीं समझा जाएगा उस वक़्त तक हम क़ौम की हैसियत से उन्नति नहीं कर सकते हैं। हमारी सभी उन्नतियां इस्लाम के दामन से जुड़ी हुई हैं।

इस संदर्भ से हमें रसूलुल्लाह स0अ0 की पवित्र जीवनी से मार्गदर्शन लेने की आवश्यकता है। आप स0अ0 के कथनों पर अमल किए बिना सफल जीवन केवल छलावा है जिससे आज का मुसलमान धोखे का शिकार हो रहा है।

यदि मानवता के इतिहास पर निगाह डाली जाए तो यह वास्तविकता खुलकर सामने आती है कि जबसे अल्लाह तआला ने मानवता को अस्तित्व प्रदान किया उस समय से मर्द और औरत एक दूसरे के पूरक की हैसियत से बराबर चले आ रहे हैं। मर्द को अल्लाह तआला ने बाहरी कामों का ज़िम्मेदार बनाया तो औरत को घर के अन्दर की ज़िम्मेदारी सौंपी। मर्द घर के बाहर के सभी मामलों की देखरेख करने वाला है और औरत घर के अन्दर के सभी कामों को करने वाली है।

चूंकि मर्द व औरत दोनों ही समाज में अपनी अपनी हैसियत रखते हैं इसलिए दोनों को आसमानी हिदायतों व आदेशों को उत्तरदायी बनाया गया है। इस्लामी आदेशों पर अमल दोनों के लिए आवश्यक है।

अब दूसरी ओर यह बात अपनी जगह पर अटल है कि अमल का भार इल्म पर है। ज्ञान सही होगा तो काम भी सही होगा और यदि ज्ञान सही न हुआ तो काम भी सही न होगा। जिस प्रकार मर्द की शिक्षा उसके लिए आवश्यक है उसी प्रकार औरतों के लिए भी शिक्षा उनके जीवन का एक अभिन्न अंग है। यदि मर्द अशिक्षित होकर जीवन यापन करेगा तो समाज के लिए संकट और नुक़सान उठाने वाला होगा और इसी प्रकार यदि औरत अशिक्षित है तो वह ज़माने पर बोझ होगी।

पता चला कि मर्द की तरह औरत की शिक्षा भी अत्यन्त आवश्यक है। यहां तक तो सब सहमत हैं, झगड़ा इसके बाद शुरू होता है। इस्लाम की शिक्षा व्यवस्था में औरत को केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि उसकी लाज, पवित्रता और मान सम्मान व शराफ़त को भी ध्यान में रखा गया है कि यह शिक्षा तो बहरहाल प्राप्त करे लेकिन इस्लाम के दायरे के अन्दर रहते हुए। ऐसी शिक्षा जिससे उसकी दुनिया भी संवर जाए और आख़िरत भी।

आप स0अ0 के तरीक़े को देखते हुए हदीस की शरह लिखने वाले यह नतीजा निकालते हैं कि इस्लाम में औरतों की शिक्षा आवश्यक है। लेकिन शिक्षा प्राप्त करते समय इस बात का बखूबी ध्यान रखना चाहिए कि जो काम उसे ज़िन्दगी में पड़ते रहते हैं, उन्हीं कामों को शिक्षा से सुसज्जित करना चाहिए। यानि लिखना,

पढ़ना, अक़ीदे का सुधार, सभ्यता व संस्कृति, वे कलाएं जिन पर दुनिया व आख़िरत की सफलता का दारोमदार है, औलाद का प्रशिक्षण, पति की सेवा, दूसरो के अधिकारों की पूर्ति इत्यादि।

हदीस की दूसरी किताबों में इस बारे में अत्यधिक रिवायतें मौजूद हैं। तिबरानी में रसूलुल्लाह स0अ0 का इरशाद कुछ इस तरह से हैः जो शख़्स अपनी बेटी को ख़ूब अच्छी तरह शिक्षा दे उसका अच्छे से प्रशिक्षण करे और उस पर दिल खोलकर ख़र्च करे तो यह बेटी कल क़यामत के दिन उसके लिए जहन्नम की आग से नजात साधन होगी।

इस हद तक तो इस्लामी व्यवस्था में औरतों के शिक्षा संबंधी अधिकार और आवश्यकताएं साबित हैं। बाकी रही पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था और औरतों की समस्या!! यह एक विचारणीय पहलू है और चिन्ता का क्षण है कि पश्चिम लेबल तो औरतों की शिक्षा का लगाता है लेकिन वास्तव में वह सहशिक्षा व्यवस्था को बढ़ावा देने हेतु प्रयासरत है।

पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था में औरतों को सरासर मुश्किलों का सामना है जिसमें औरतों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता लाज समाप्त हो जाती है। वह अपनी इज़्ज़त व सम्मान से हाथ धो बैठती है। पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था में आस्था व कर्म का सुधार तो एक ओर इसमें न तो इस्लामी संस्कृति की छाप है न कोई आसार। न पारिवारिक शिक्षा का कोई सबक़ है न घरेलू शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने का कोई फ़ार्मूला। औलाद की तरबियत के बारे में न कोई हिदायत मिलती है न ख़ुशहाल पारिवारिक जीवन की कोई गारंटी। इसलिए इस्लाम की बेटियों को इस्लाम के ही दामन से जुड़ा रहना चाहिए ताकि उनकी दुनिया भी संवर जाए और आख़िरत भी।

**शेष** : हक़ीक़त या फ़साना

10. इसी तरह सजदे में कम से कम तीन बार "सुब्हान रब्बिल अल आला" कहना सुन्नत है।

इसीलिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमायाः जब तुममें से से कोई रुकूअ करे और रुकूल में तीन बार "सुब्हान रब्बिल अल अज़ीम" कहे तो उसका रुकूअ पूरा हो गया और ये छोटा दर्जा है और जब सजदा करे और सजदे में तीन बार सुब्हान रब्बियत आला कहे तो उसका सजदा पूरा हो गया और यह अदना दर्जा है।

11. सजदे में जाते समय पहले दोनो घुटने, फिर दोनों हाथ, फिर चेहरे का ज़मीन पर रखना, और सजदे से उठते समय इसके विपरीत करना।

12. सजदा करते समय चेहरे को दोनों हथेलियों के बीच रखना और मर्द का अपने पेट को रानों से दूर रखना, इसी तरह कोहनियों को अपने पहलू से दूर रखना और कलाइयों को ज़मीन से उठाकर रखना।

जहां तक औरत का संबंध है वह पेट रानों से मिलाकर रखेगी और हर चीज़ में सिमटी सिमटाई रहेगी।

13. पहली बैठक में मर्द के लिए सुन्नत यह है कि बाएं पैर को बिछा कर उस पर बैठे और दायां पैर खड़ा कर ले और पैर की उंगलियां क़िब्ले की तरफ़ कर ले जहां तक औरत का संबंध है तो वह दोनों पैर दाहिनी तरफ़ निकाल कर बाएं कूल्हे पर बैठ जाएगी।

14. पहली और दूसरी बैठक में जब "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहे तो उंगली उठाना सुन्नत है।

15. आख़िरी बैठक में अत्तहियात के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ना और दरूद शरीफ़ के बाद सलाम से पहले दुआ पढ़ना भी सुन्नत है।

**महान क्रान्ति**

जब ज़मीन प्यासी होती है तो आसमान व ज़मीन का पालनहाल पानी बरसाता है। जब इनसान अपने खाने के लिए बेक़रार होता है तो वह फ़सल के मौसम को भेज देता है और जब सूखे की संभावना होती है तो आसमान पर रहमत की बदलियां फेल जाती हैं। मानव संसार के आत्मिक वातावरण का एक ऐसी ही महान क्रान्ति थी जो छटी सदी ईसवी में प्रकट हुई। वह अल्लाह की रहमत की बदलियों की एक व्यापक उन्नति थी जिसके आम फ़ैज़ ने तमाम कायनाए–ए–हस्ती को ख़ुशहाली व हरियाली की खुशख़बरी सुनाई और जमीन की बदहाली का दर्द हमेशा के लिए दूर हुआ।

# सेना के प्रशिक्षण में आप (स०अ०) का प्रभाव

मौलाना मुहम्मद असद

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने मदीना पहुंचने के छः माह बाद फ़ौज की बाग़डोर का एक झन्डा हज़रत उबैदा इब्ने हारिस इब्ने मुत्तलिब (रज़ि0) को अता किया इसके बाद लगातार गज़वों व जंगों का सिलसिला शुरू हो गया। बदर से पहले की छोटी–मोटी जंगों में बज़ाहिर हर कुरैश को निशाना नहीं बनाया गया लेकिन इसका राजनीतिक व सैन्य लाभ हुआ जो शासन के जमाव के लिये आवश्यक था। उन्होंने मुहाजिरीन के हौसले बढ़ा दिये और यसरिब के बुख़ार से निजात देकर उनमें चुस्ती पैदा कर दी और मुसलमानों को एक दृढ़ नेतृत्व के अधीन एक समान कार्य का आदी बना दिया जिसमें हसब व नसब और क़बाइली भेदभाव का कोई दख़ल नहीं था और वो लगातार फ़ौजी कार्यवाहियां निर्णायक जंग के लिये लगातार प्रशिक्षण और ट्रेनिंग का हिस्सा थी।

मदीना ने इन फ़ौजी कार्यवाहियों से जान लिया कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ताक़त का मुक़ाबला ताक़त से करना चाहते हैं और अरबों ने भी महसूस कर लिया कि कुरैश से मुक़ाबला करने वाले आदमी से छेड़–छाड़ नहीं की जा सकती वरना अगर वो आप (स0अ0) में कमज़ोरी पाते तो वो मदीने पर हमला कर देते और वहां लूट–मार को अपने गर्व व औरतों के लिये गीत गाने का साधन बना लेते।

इसी प्रकार कुरैश को भी इस बात का एहसास हो गया कि रसूलुल्लाह (स0अ0) और सहाबा जिन्हें उन्होंने नाहक़ और खुदा परस्ती के जुर्म में निकाला था, मदीना में जाकर उनके आर्थिक जीवन के लिये ख़तरा बन गये हैं जबकि दीनी जीवन के लिये इतने ख़तरनाक नहीं हैं।

उन्होंने समझ लिया कि जिस तरह उन्होंने उनकी आस्था में हस्तक्षेप किया था उसी प्रकार वो उनकी प्यारी चीज़ व्यापार में हस्तक्षेप कर रहे हैं और अगर वो व्यापारिक स्वतन्त्रता चाहते हैं तो उन्हें अक़ीदे की आज़ादी को स्वीकार करना होगा और ये चीज़ आप (स0अ0) को हुदैबिया की संधि में व बदर व उहद और अहज़ाब की खूनी जंगो के बाद प्राप्त हुई।

वो सेना का प्रशिक्षण दो साल तक जारी रहा फिर जब रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अन्दाज़ा कर लिया कि उनके सहाबा में ऐसी ताक़त आ गयी है जो किसी जंग के बाद अरबों में उनका स्थान श्रेष्ठ कर सकती है तो आप (स0अ0) ने इसमें देर नहीं कि और बदर में पहुंच कर कुरैश का इन्तिज़ार करने लगे जो साज़ोसामान और व्यक्तिबल के साथ उनका सामना करने आये उसके एक हज़ार जवान उस समय के असलहों से लैस थे और उनके साथ सौ घुड़सवार और सात सौ ऊंट थे।

दूसरी ओर आप (स0अ0) के साथ 314 पैदल लोग थे (मशहूर रिवायत 313 की है) और उनके पास केवल तलवारें थीं और तीन घोड़े और क़रीब सत्तर ऊंट थे इस अवसर पर आप (स0अ0) ने सहाबा की जंगी तैयारी का अनुभव करने के लिये उनकी राय पूछी, मुहाजिरीन तो बहुत खुलकर बोले यहां तक कि मिक़्दाद इब्ने अम्र (रज़ि0) ने कहा कि "या रसूलुल्लाह! आप ज़रूर चलें" (बखुदा जिसने आप (स0अ0) को हक़ के साथ भेजा है) अगर आप (स0अ0) हमें बरकुल ग़िमाद (यमन) तक भी ले चलेंगे तो हम चलेंगे और वहां तक लड़ते चलेंगे। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उनका शुक्रिया अदा किया फिर अन्सार की ओर रुख़ करके फ़रमाया आप लोग भी राय दें (ये इसलिये था कि अन्सार ने आन्तरिक रूप से मदद की बैत की थी, इसलिये आप (स0अ0) को संभावना थी कि वो बाहरी दुश्मन से लड़ने से इनकार न कर दें) इस पर साद इब्ने मआज़ (रज़ि0) कहने लगे कि या रसूलुल्लाह! शायद आप (स0अ0) का चेहरा–ए–मुबारक हमारी ओर है? आप (स0अ0) ने फ़रमाया हां ऐसा ही है। तो साद (रज़ि0) कहने लगे कि हम आप (स0अ0) पर ईमान लाये और आप (स0अ0) की तस्दीक़ की और गवाही दी कि आप (स0अ0) जो लाये हैं वो सच है और हमने इताअत का इक़रार किया तो अब आप (स0अ0) का जो इरादा है उस पर अमल कीजिये हम आप (स0अ0) के साथ हैं। खुदा की क़सम जिसने आप (स0अ0) को हक़ के साथ भेजा है अगर आप (स0अ0) हुक्म देंगे तो हम इस समुन्द्र में आप (स0अ0) के साथ घुस जायेंगे और हममे से कोई पीछे न रहेगा। हमें तो ये भी नापसंद है कि दुश्मन से हमारा सामना आज के बजाये कल हो, हम जंग में साबित क़दम रहने वाले लोग हैं, शायद अल्लाह आप (स0अ0) को हमारे ऐसे काम दिखाये जिनसे आप (स0अ0) की आंखे ठन्डी हों। तो अल्लाह का नाम लेकर हमें ले चलिये।

हज़रत साद (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0)

ये सुन कर खुश हुए और फ़रमाया कि चलो और खुशख़बरी लो इसलिये कि अल्लाह ने मुझसे दो जमाअतों में से एक का वादा किया है। बख़ुदा! गोया कि मैं उस क़ौम के गिरने की जगह देख रहा हूं बदर से पहले सेना में ये रूह काम कर रही थी जिसको मुहाजिरीन व अन्सार ने स्पष्ट किया। वो पाक नफ़्स मानो ईमान के सांचे में ढले थे और सुनने और बात मानने ने उनमें चमक पैदा कर दी थी और शासक की समझदारी राय लेने से प्रकट हुई। वो बार–बार लोगों से कह रहे थे कि लोगों! मुझे सलाह दो हालांकि वो जानते थे कि अगर वो उन्हें लेकर समन्दर में कूद पड़ें या रेगिस्तान में दाख़िल हो जायें तब भी वो उनका विरोध नहीं करेंगे। मगर शराफ़त और वफ़ादारी की मांग थी कि वो अन्सार की राय भी उस जंग के लिये ज्ञात कर लें जिसके लिये उन्होंने अभी तक बैत नहीं की थी।

फिर जब युद्ध हुआ तो लोगों व सामान की कमी, अधिकता पर हावी हो गयी जबकि दोनों पक्ष अरब और बहादुर थे मगर जैश–ए–मुहम्मदी का पल्ला दो बातों से भारी रहा। एक युद्धप्रणाली दूसरे मौत से बेख़ौफ़ी। लोगों ने बदर में इस युद्धप्रणाली का चमत्कार उस समय देखा जब मुश्रिकीन के घोड़ो ने सफ़ों पर हमला किया मगर वो उन्हें एक क़दम भी पीछे न हटा सके और हैरान होकर वापस हुए कि उन्होंने कुछ ऐसा देखा जिसे सुना भी न था उन्होंने तो ये सुन रखा था कि जब घोड़े हमला करते हैं तो युद्धक्षेत्र के अनुभवियों के अनुसार बड़ी दहशत होती है, और पैदल फ़ौज के लोग उनके आगे बहुत कम टिक पाते हैं। बदर में लोगों ने देखा कि तीन सौ लोग जिन्हें रसूलुल्लाह (स0अ0) ने प्रशिक्षण दिया था और व्यवस्थित किया था वो अल्लाह के रास्ते में दुनिया से जिहाद के लिये निकलते हैं तो ज़मीन उनके लिये खोल दी जाती है। बदर की जंग से लोगों ने युद्धप्रणाली और मौत से बेख़ौफ़ी का मूल्य समझा। इसी प्रकार उन्होंने बाद में ख़न्दक़ के युद्ध में देखा कि ज़िन्दगी से ज़्यादा हक़ को चाहने वालों ने किस तरह अपने शहर से क़बीलों की एक बड़ी भीड़ को वापसी पर मजबूर कर दिया और ये स्पष्ट हुआ कि कार्यप्रणाली किस प्रकार संख्या और साज़ोसामान पर हावी होती है।

मुहम्मद (स0अ0) के इसी माहिर नेतृत्व ने उहद में मदीना को बचाया था कि अभी सेना सदमे से बाहर ही नहीं हुई थी कि उसे हरकत और दूसरी सेना का पीछा करने का आदेश दे दिया और अगर युद्धप्रणाली व इताअत की तेज़ी न होती तो कुरैश मदीने पर हल्ला बोलकर मुसलमानों की बची हुई सेना का ख़ात्मा कर देते। प्रशिक्षित सेना के माहिर नेतृत्व ने कुरैश को पराजय पर मजबूर कर दिया और कल के पराजित विजय की ओर अग्रसर होने लगे। ये तो कुछ छोटे–छोटे उदाहरण थे जिनकी व्याख्या आपको इतिहास के पन्नों में मिलेगी और रसूलुल्लाह (स0अ0) के शासन व नेतृत्व और राजनीति कौशल और न्याय प्रिय लोगों को आप की श्रेष्ठ ज़ात की व्यापकता ज्ञात हो सकेगी। ये अजीब बात है कि वो सेना के प्रशिक्षण, युद्ध के वाक़्ये और मशवरा व उपाय जिसकी ओर हमने इशारा किया उसने मुहम्मदी शासन स्थापित किया जो मानव इतिहास के एक महान साम्राज्य का आधार बनी किन्तु वो शासन उद्देश्य नहीं था हम ऐतिहासिक सत्यता और अपने बहस के नतीजे के साथ नाइन्साफ़ी करेंगे अगर हम लोगों को शासन को रसूलुल्लाह (स0अ0) का अस्ल उद्देश्य समझने की ग़लतफ़हमी में पड़ा रहने दें। जबकि अस्लियत ये है कि शासन प्राथमिकता नहीं था बल्कि उस अस्ल मक़सद की सीढ़ी थी कि शिर्क का ख़ात्मा हो और तौहीद बुतपरस्ती की जगह ले। जब मक्का ने मुसलमानों पर ज़ुल्म व ज़्यादती की हद कर दी और इस्लामी अक़ीदे का जीवन और स्वतन्त्रता और दावत की संभावनांए प्राप्त करने का पैग़म्बरी प्रयास असफल रहा तो आप (स0अ0) ने ताक़त का सामना ताक़त से करने का फ़ैसला और धर्म की स्वतन्त्रता की मांग की जिसके बारे में कुरआन में है कि: "अगर अल्लाह इन्सानों का बचाव इन्सानों के ज़रिये न करता (यानि हक़ वालों को बातिल पर समय–समय पर हावी न करता रहता) तो गिरिजे और क्लीसा (नसारा के) नमाज़ की जगहें (यहूद की) और मस्जिदें (मुसलमानों की) जिनमें अल्लाह का नाम कसरत के साथ लिया जाता है, नष्ट कर दी जातीं।" (सूरह हजः 40)

इन हथियार पूर्ण संघर्षों का उद्देश्य एक ही आधारभूत चीज़ यानि एक वहशी क़ौम में अक़ीदे की आज़ादी की बहाली था। इसलिये महानायक (स0अ0) की कार्यप्रणाली व राजनीति कौशल की विशेषता भी उसी प्रकार हैरतअन्गेज़ रूप से प्रकट हुई, जिस प्रकार मक्के में अक़ीदे पर साबित क़दमी, मुसीबतों पर सब्र व ज़ब्त, दावत में स्पष्टता, साधनों की अधिकता व उद्देश्य की व्याख्या के रूप में प्रकट हुआ था। हम जगनायक (स0अ0) की मदनी राजनीति के अस्ल उद्देश्य व मक़सद यानि दीनी आज़ादी पर जल्द ही बात करेंगे।

# मदरसा बोर्ड ?

मुहम्मद सिबग़त उल्लाह नदवी

सरकारी मदरसा शिक्षा बोर्ड जो हर राज्य व केन्द्र सरकार के एजेन्डे में होता है। पिछली संप्रग सरकार के एजेन्डे में भी यह था जिसकी स्थापना न हो सकी। वर्तमान मोदी सरकार ने भी अपने एजेन्डे में इस बात को शामिल किया है। फिलहाल देश के बहुत से राज्यों में इस प्रकार के बोर्ड हैं जहां कर्मचारियों को सरकार की ओर से अच्छा वेतन दिया जाता है और वे इससे ख़ुश हैं। उनके वेतन को देखकर दूसरे मदरसों के व्यवस्थापकों का भी प्रयास होता है कि उनका मदरसा सरकार के अधीन हो जाए। शिक्षकों व कर्मचारियों को अच्छे वेतन मिलने लगें और कर्मचारियों की भर्ती में रिश्वत के द्वारा व्यवस्थापकों की जेबें भी गर्म हों। इस प्रकार देश में सरकारी मदरसों की बहुत बड़ी संख्या है। उनमें से किसी भी मदरसे में शिक्षा के नाम पर दिखावे के लिए प्राइमरी शिक्षा के एक मकतब के सिवा कुछ नहीं होता यद्यपि वहां बोर्ड की परीक्षांए अवश्य करायी जाती हैं। जो हर राज्य में अलग–अलग क्लास के नामों से होती हैं। जैसे मुंशी, अदीब, कामिल, तहतानिया, फ़ौक़ानिया, मौलवी, आलिम और फ़ाजिल इत्यादि यह सभी डिग्रियां स्कूल कालिजों और यूनीवर्सिटी के समान होती हैं। यानि वहां शिक्षा कुछ भी नहीं दी जाती, शिक्षा के नाम पर केवल बोर्ड की परीक्षा के फ़ार्म भरवाने के केन्द्र के तौर पर उनका इस्तेमाल होता है। इसमें कोई शक नहीं कि बोर्ड की डिग्रियों के द्वारा मुट्ठी भर मुसलमानों को जिनको उंगलियों पर गिना जा सकता है, सरकारी नौकरी मिल जाती है। इसी लालच में मुसलमान अपने बच्चों को मदरसा बोर्ड की परीक्षाएं दिलवाते रहते हैं और उनका शैक्षिक कैरियर बरबाद करते रहते हैं।

मुसलमान जहां इस बात से ख़ुश होते रहते हैं कि मदरसा शिक्षा बोर्ड के कारण बिना पढ़ाए वे अपने बच्चों को डिग्रियां दिलाते हैं, मदरसों के व्यवस्थापक इस बात से ख़ुश होते हैं कि उन्हें उनके वेतन के बारे में ज़्यादा माथापच्ची नहीं करना पड़ता, क्योंकि यह ज़िम्मेदारी सरकार उठा लेती है। कर्मचारियों को इस बात की ख़ुशी होती है कि सरकारी नौकरों की तरह उन्हें भी दूसरी सहूलतों के साथ अच्छा वेतन मिल जाता है। बहुत से मुसलमान इस पहलू से सोचते हैं कि मदरसा बोर्ड की स्थापना से सरकारी ख़र्च पर मुस्लिम छात्रों की दीनी शिक्षा के साथ सांसारिक शिक्षा की समस्या भी हल हो जाती है। इसलिए वे राज्य व समुदाय के स्तर पर मदरसा बोर्ड की स्थापना की वकालत करते फिरते हैं लेकिन भूल जाते हैं कि सरकार को उनकी दीनी शिक्षा से क्या मतलब हो सकता है। वह तो वही शिक्षा देगी जो काम न आए और वही हो रहा है जो मदरसे बोर्ड के अधीन चलते हैं वहां दीनी क्या दुनियावी शिक्षा भी नहीं दी जाती है। कोई भी देख सकता है कि बोर्ड की डिग्री रखने वाले मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या मौजूद तो है लेकिन ज्ञान से ख़ाली है। ऐसी डिग्रियों से उनका, कुन्बे का या मिल्लत का क्या भला हो सकता है यह सोचने की बात है। अब तो देखा जा रहा है कि जब मदरसा बोर्ड से इतनी आसानी से परीक्षाएं हो जाती हैं तो ग़ैर मुस्लिम भी बोर्ड की डिग्रियां हासिल करने लगे हैं क्योंकि वे समझते हैं कि पढ़ना तो कुछ नहीं सिर्फ़ डिग्रियां हासिल करना है, लेकिन अब बात डिग्रियों की भी नहीं रही, सरकारी मदरसों के द्वारा मुसलमानों को शिक्षा पाने से दूर करने का काम तो पहले से हो रहा था अब उनका अक़ीदा भी ख़राब करने की कोशिश हो रही है। सरकारी मदरसों के पाठ्यक्रम में ऐसे–ऐसे विषय शामिल कर दिये गए हैं या परीक्षाओं के परचे इस प्रकार से बनाए जा रहे हैं जो उन्हें इस्लाम से अनभिज्ञ और देश के बहुसंख्यकों के धर्म व आस्थाओं से क़रीब करने वाले हैं।

आर.एस.एस. ने लम्बे अर्से से सरकारी कार्यालयों में अनुचित हस्तक्षेप किया है, अब केन्द्र में मोदी की सरकार बनने के बाद मुसलमानों से संबंधित सरकारी संस्थाओं पर उसके प्रभाव पड़ने लगे हैं। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश शिक्षा बोर्ड के कामिल अरबी फ़ारसी दोम की परीक्षाएं हुईं उसमें मुताला मज़ाहिब (सुन्नी व शिया) के पर्चे में सवाल कैसे आए, उनको देखकर आप समझ सकते हैं कि मदरसा बोर्ड का प्रयोग कितना ग़लत हो रहा है। मुसलमानों को क्या पढ़ने और जानकारी रखने के लिए कहा जा रहा है। आठ सवालों पर आधारित प्रश्नपत्र में पांच प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य थे। सात हिन्दु धर्म से संबंधित थे और एक सिख धर्म से संबंधित था, और प्रश्न भी ऐसे–ऐसे कि जिनको पढ़कर ही बेचैनी होने लगती है। पहला प्रश्न यह था कि "हिन्दुइज़्म" के परिचय के विषय पर एक निबन्ध लिखिए, दूसरा प्रश्न यह था कि हिन्दु धर्म में सबसे बड़ा त्योहार कौन सा है?उसके कारण बताइए?तीसरा प्रश्न था कि वेदो के प्रकार बताइए?और उनके बारे में हिन्दुओं की आस्था भी बताइए, चौथा प्रश्न था कि भगवद गीता के बारे में आप क्या जानते हैं?व्याख्या कीजिए?पांचवा प्रश्न यह था कि हिन्दु धर्म के विभिन्न अदवार की व्याख्या कीजिए?सातवां प्रश्न यह था कि हिन्दुओं में शादी–ब्याह के तरीक़ों को लिखिए और आठंवा प्रश्न यह था कि रामायण में किस कथा का उल्लेख है?संक्षिप्त में लिखिए, विभिन्न धर्मों के नाम पर केवल छठा सवाल सिख धर्म से संबंधित था यानि सिखों के कितने गिरोह हैं और उनमें गुरूनानक जी का क्या महत्व है?यह सर्वधर्म अध्ययन का प्रश्न पत्र है या हिन्दु धर्म अध्ययन का?सवाल इसका नहीं कि ऐसा किसने किया और किसके इशारे पर किया, बल्कि मदरसा बोर्ड के नाम पर मुसलमानों को कैसी जानकारी रखने को कहा जा रहा है?मदरसा बोर्ड के स्पष्टीकरण से तो यह समस्या हल होगी नहीं, सवाल इस बात का है कि हम एक सरकारी संस्था से मुसलमानों की दीनी शिक्षा की उम्मीद कैसे कर सकते हैं। अब तो उन लोगों की आंखे खुल जानी चाहिए जो मदरसा बोर्ड की स्थापना और उनसे मदरसों को सम्बद्ध करने की वकालत करते हैं।

## **शेष** : मनुष्य के निर्माण का उद्देश्य

इसमें जो इबादत रखी है उसमें क़याम भी है, रुकूअ भी है, सजदा भी है, क़ादा और जलसा भी है। संक्षेप में यह कि इस उम्मत को अल्लाह तआला ने सारी उम्मत का निचोड़, सारी उम्मतों को संग्रह और एक श्रेष्ठ स्तर बना दिया है। इसी लिए क़ानून इस उम्मत पर सम्पूर्ण कर दिया गया और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स0अ0 की नुबूव्वत के बाद किसी नुबूव्वत की आवश्यकता बाक़ी न रही। आप स0अ0 को आख़िरी नबी केवल किसी सम्मान के कारण न था, बल्कि दीन को आप पर सम्पूण किया गया, इसीलिए आपके बाद किसी दूसरे नबी के आने की आवश्यकता बाक़ी ही नहीं रही। दुनिया का भी यही नियम है कि जब कोई काम किसी के द्वारा सही तरीक़े से हो रहा हो तो उसमें कोई दूसरा नया आदमी लगाने की आवश्यकता नहीं होती। इसी प्रकार आप पर क़ानून सम्पूर्ण करने का कारण यही है कि आप स0अ0 की उम्मत के लिए आप पर अल्लाह तआला ने क़ानून को व्यापक क़ानून बना दिया है अतः अल्लाह तआला के विद्यान को लागू करना और श्रेष्ठ चरित्र व विशेषताओं वाला मनुष्य बनने की जिम्मेदारी अल्लाह तआला ने मनुष्य पर लागू की। अब मनुष्य ने ज़िम्मेदारी तो उठा ली क्योंकि उसमें उठाने की योग्यता भी थी, लेकिन उसने इस ज़िम्मेदारी की महानता, उसके स्तर पर विचार नहीं किया और यदि विचार कर लेता तो कुछ देर के लिए झिझकता कि वास्तव में यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। और वास्तविकता भी यही है कि अल्लाह तआला के विद्यान को लागू करना, अपने को सर्वाधिक नेक प्राणी बनाना यह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। इसमें संकल्प व दृढ़निश्चय और अपनी इच्छा पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण पाने और संतुलन की आवश्यकता है। अल्लाह तआला इन विशेषताओं को नबी में पूरी तरह पैदा फ़रमाता है और फिर उसकी निगरानी व सरपरस्ती करता है। इसीलिए आप स0अ0 मासूम थे, क्योंकि अल्लाह तआला की ओर से पूरी सुरक्षा हो रही थी कि इनसान की हैसियत से आपसे ऐसी बात न हो जाए जो इनसान की बात है।

# गुस्ताख़-ए-रसूल की सज़ा

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

**हदीस:** हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि एक यहूदी औरत हुज़ूर स0अ0 के साथ गाली–गलौज करती थी और शान में गुस्ताख़ी करती थी तो किसी व्यक्ति ने उसका गला घोंट दिया, जिससे वह मर गयी और आप स0अ0 ने इस ख़ून को क़लअदम घोषित कर दिया।

**फ़ायदा:** कुरआन व हदीस में बहुत सी जगहों पर मोमिनों को यह संदेश दिया गया है कि नबी स0अ0 का हक़ खुद उनकी जान व माल और सभी चीज़ों से बढ़कर है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "नबी का मोमिनों पर उनकी जानों से ज़्यादा हक़ है।" आप स0अ0 ने अपने इस हक़ को साफ़ करते हुए फ़रमाया: तुममे से कोई उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि मैं उसको सभी लोगों से प्यारा न हो जाऊं। महबूबियत के इस स्थान को पाने के लिए कुरआन व हदीस में इसके आदाब भी बताए गयें हैं, ताकि कहीं ऐसा न हो कि इनसान आप स0अ0 से मुहब्बत के इज़हार में तौहीद के उन मूल्यों को नज़रअन्दाज़ कर दे जिस पर इस्लाम की महान इमारत खड़ी है। मगर इसी के साथ इस बात की ओर भी विशेष ध्यान दिलाया गया है मनुष्य कम से कम स्तर पर भी जानबूझ कर या अनजाने में आप स0अ0 की शान में कोई ऐसी बात न कह बैठे जिससे उसके ईमान से निकल जाने का ख़तरा हो। इसीलिए जो लोग आप स0अ0 को तकलीफ़ पहुंचाने जैसा संगीन जुर्म करते हैं, उनके बारे में कुरआन का खुला ऐलान है: "जो लोग भी अल्लाह और उसके रसूल स0अ0 को तकलीफ़ पहुचांते हैं, उन पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह की फिटकार है और उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा गया है।"

आप स0अ0 के युग में भी बहुत से ऐसे मनुष्य थे जो आप स0अ0 की शान में गुस्ताख़ी करते थे। रिवायतों से मालूम होता है कि आप स0अ0 के जांनिसार सहाबा ने उनको दुनिया में जीने का कोई मौक़ा नहीं दिया और आप स0अ0 ने भी उनके इस काम पर कोई रोक न लगायी। क्योंकि आप स0अ0 की शान में गुस्ताख़ी करना सिर्फ़ ईमान के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि मानवता से भी विरोध है। इतिहास के पन्ने इसकी मुंह बोलती तस्वीर हैं कि आप स0अ0 के आने से पहले दुनिया सभ्यता से अपिरिचित और जिहालत की अंधकार मय घाटियों में चक्कर काट रही थी। आप स0अ0 के आने के बाद दुनिया को मानवता का सबक़ मिला। मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। किन्तु इन वास्तविकताओं के बाद भी यदि कोई मनुष्य आप स0अ0 की शान में गुस्ताख़ी करता है तो उसकी यह गन्दी हरकत इस बात की ओर इशारा करेगी जिसको कुरआन मजीद में बहुत ही शानदार तरीक़े से बयान किया गया है: "उनकी ज़बानों से बुग़्ज़ फूटा पड़ता है और उनके सीनों में जो कुछ छिपा हुआ है वह उससे कहीं बढ़कर है।"

जिस प्रकार रिसालत के युग में आप स0अ0 की शान में गुस्ताख़ी करने वाले यहूद या यहूदी मानसिकता के लोग थे, ठीक इसी प्रकार से आज भी समय–समय पर ऐसी घटनाएं सामने आती हैं, जिनमें यही यहूदी मानसिकता प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कार्यरत होती है। ऐसे रसूल या खुदा के गुस्ताख़ के बारे में सभी उलमा अहले सुन्नत वल जमाअत का पक्ष यही है कि उसको मौत के घाट उतार दिया जाए। सहाबा के युग में भी इसके विभिन्न प्रमाण हमको हदीस की किताबों में मिलते हैं। इसको सामने रखते हुए तमाम ईमानवालों की यह ज़िम्मेदारी होती है कि इस प्रकार की घटनाओं पर किसी प्रकार के सुलह–समझौते से काम न लें, अपितु यह प्रयास करें कि दुश्मन को उसके अन्जाम तक पहुंचाकर ही दम लें, चूंकि यह "लोकतन्त्र" का दौर है इसीलिए आवश्यक है कि उसके क़ानूनों को ध्यान में रखते हुए हम सरकार में अपना विरोध दर्ज करांए, ताकि आगे ऐसी घटनाएं सामने न आएं जिनसे मानवता के दामन पर दाग़ लगता है।

# आख़िरत की खेती

**मुहम्मद नजमुद्दीन नदवी**

दीन–ए–इस्लाम में यह बात साफ़ कर दी गयी है कि इनसान इस दुनिया में जो भी अच्छा या बुरा काम करेगा आख़िरत में उसका वैसा ही बदला पाएगा। अच्छे काम पर मिलने वाले अज्र व सवाब के बारे में बताते हुए फ़रमाया गयाः "और जो शख़्स भी भले काम करेगा वह मर्द हो या औरत शर्त यह है कि वह मोमिन हो तो वे लोग जन्नत में दाख़िल किए जाएंगे।" (सूरह निसाः 124) इसी तरह बुरे कामों पर मिलने वाले बदले के बारे में अल्लाह का इरशाद हैः "जो भी बुराई करेगा उसकी सज़ा पाएगा।" कुरआन मजीद में इन आयतों के अलावा बहुत सी जगह पर इस बात की शिक्षा दी गयी है कि इस दुनिया में इनसान जो कुछ भी करेगा आख़िरत में उसी एतबार से उसके बदले का अधिकारी होगा। रिवायत के विषयों से भी इस बात के बारे में पता चलता है कि आप स0अ0 ने सहाबा के स्वभाव को इसी बात पर ढाला कि हर व्यक्ति इस जीवन में जैसा कार्य करेगा, वैसा ही फल पाएगा। सहाबा किराम ने इस बात को अपने स्वाभाव में शामिल कर लिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि हर काम में उनके सामने आख़िरत की सोच कार्य करती थी और इस सोच का लाभ यह था कि उनका हर काम दिखावे, घमण्ड, ख़यानत, झूठ, जलन, हसद, ईर्ष्या से पाक होता था, क्योंकि उनको यह बात अच्छी तरह से पता थी कि हमारा काम इन ख़तरनाक चीज़ों के मिल जाने से ख़राब हो जाएगा और अल्लाह की नज़र में उसकी वह हैसियत बाक़ी नहीं रहेगी, जिसकी एक ईमान वाले से मांग की गयी है। घर के मामलात हो या व्यापारिक संबंध या जंग का मैदान हर जगह उनके ध्यान में यह बात रहती थी कि हमारा यह काम केवल अल्लाह की निकटता और आख़िरत की ज़िन्दगी संवारने के लिए है। यह आख़िरत के जीवन को सामने रखने का ही परिणाम था कि जब जंग के मैदान में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 को हज़रत उमर बिन फ़ारूक़ रज़ि0 पदावनत करते हैं, उसके बाद भी वे उसी ईमानी ग़ैरत के साथ जंग में डटे रहते हैं, जैसे उससे पहले थे। उनको ज़र्रा बराबर भी इस बात का एहसास नहीं होता कि उनके साथ क्या सुलूक किया गया, क्योंकि वे इससे पहले भी केवल अल्लाह की रज़ा और आख़िरत की ज़िन्दगी में नेकी कमाने के लिए लड़ रहे थे और उसके बाद भी। इसके अतिरिक्त भी बहुत सी ऐसी घटनाएं हैं जो सहाबा किराम रज़ि0 के जीवन में मिलती हैं, जिनके अध्ययन से मालूम होता है कि उनकी असाधारण उन्नति का एक राज़ यह भी था कि उनके सामने हर समय आख़िरत की ज़िन्दगी रहती थी।

कुरआन व हदीस की आख़िरत की ज़िन्दगी के बारे में शिक्षाएं, सहाबा किराम का उस पर अमल और उसके परिणाम में उनकी असाधारण उन्नति, उस परिदृश्य में यदि हम आज के समाज पर नज़र डालते हैं तो पता चलेगा कि आज इस बारे में कितनी ग़फ़लत व सुस्ती हो रही है। हम अपने काम में किस हद तक यह बात ध्यान में रखते हैं कि क़यामत के दिन हमको इसका बदला भी दिया जाएगा। आम तौर पर इबादत में यह नियत शामिल होती है कि हम ''हाजी'' या ''अल्लाह वाले'' कहे जाएं। मामलात अच्छे नहीं होते और अगर होते भी हैं तो इसमें कभी–कभी कोई न कोई ऐसी बुरी नियत रहती है जिसके कारण वह काम भी आख़िरत के जीवन में मिलने वाले बदले के एतबार से खोखला हो जाता है। यही कारण है कि आज इस सोच की कमी के कारण हमारे समाज में वह सभी बुराइयां पायी जा रही हैं जिनको इस्लामी समाज में घिनावनी नज़र से देखा गया है।

वास्तविकता यह है कि यदि इस दुनिया की ज़िन्दगी में हर काम पर मिलने वाले बदले का अक़ीदा बाक़ी न रहे तो दुनिया में फैलते हुए झगड़े, बेचैनी, अविश्वास को किसी भी सरकार का कोई भी क़ानून नहीं रोक सकता है। आख़िरत की सोच एक ऐसा बेलाग क़ानून है जिसकी मौजूदगी में इनसान हर काम के अन्दर उस पर मिलने वाले बदले को ध्यान में रखता है और उन सभी बुराईयों को अपने दामन से दूर रखने की कोशिश करता है जिनसे आख़िरत की ज़िन्दगी दाग़दार होती है। पुराने ज़माने की मिसालें इतिहास में मौजूद हैं कि उन लोगों को आख़िरत के जीवन के हर समय के विचार ने उन लोगों को श्रेष्ठता के किस स्तर पर पहुंचा दिया था और आज के समाज की स्थिति भी हमारे सामने है कि हर व्यक्ति आख़िरत के जीवन को भूलकर केवल स्वार्थ व हवस का पुतला बना हुआ है।

# मुस्लिम देशों की सैन्य एकता

## आशाएं – चिन्ताएं

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सऊदी अरब के नेतृत्व में एक सैन्य संगठन के निर्माण की घोषणा हुई है जिसमें 34 मुस्लिम देश सम्मिलित हैं। इसका मूलभूत उद्देश्य आपसी सहयोग के द्वारा आतंकवाद का सामना करना है। इस संगठन का केन्द्रीय कार्यालय सऊदी अरब की राजधानी रियाद में होगा जहां से आपसी संबंधो को और सैन्य संगठन को कन्ट्रोल किया जाएगा।

मुस्लिम देशों का यह पहला संगठन है जो आतंकवाद के समापन के लिए बनाया गया है विशेषतयः वह आतंकवाद जिसका संबंध इस्लाम और मुसलमानों से जोड़ा जाता है और फिर मीडिया के प्रोपगन्डो से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस्लाम की छवि धूमिल होती है। पश्चिमी देशों में भी इस संगठन को एक महत्वपूर्ण एवं संतोषजनक क़दम बताया जा रहा है।

इस संगठन का निर्माण ऐसे समय में हुआ है जबकि एक ओर सऊदी अरब होसी विद्रोहियों से लड़ रहा है तो दूसरी ओर मध्य पूर्व का एक बड़ा हिस्सा गृहयुद्ध की भेंट चढ़ा हुआ है इसके अतिरिक्त वह आईएस की सैन्य व कट्टरपंथी कार्यवाहियां भी चिन्ता का कारण बनी हुई हैं। सऊदी अबर के उपराजकुमार और रक्षा मंत्री मुहम्मद बिन सुलेमान से स्पष्ट कहा है कि इस संगठन की कार्यवाहियां केवल मुस्लिम देशों तक सीमित नहीं होंगी बल्कि जहां कहीं भी आतंकवाद होगा संगठन वहां अपना प्रभावशाली किरदार अदा करेगा।

जिन देशों को इस संगठन में शामिल किया गया है उनमें एक दर्जन के क़रीब एशियाई देश हैं जैसे सऊदी अबर के अतिरिक्त बहरैन, अरब इमारात, क़तर, पाकिस्तान, बंग्लादेश, फ़िलिस्तीन, यमन, मालद्वीप, कुवैत, लेबनान, जार्डन इत्यादि इसके अलावा तुर्की भी है जिसका निन्यानवे प्रतिशत हिस्सा एशिया में है लेकिन राजधानी यूरोप में होने के कारण उसे यूरोप का हिस्सा समझा जाता है। इसके अतिरिक्त अधिकतर ग़रीब अफ़्रीक़ी देश हैं जैसे सूडान, सूमालिया, त्यूनिस, मराकिश, नाइजीरिया या लीबिया और मिस्र इत्यादि।

इस संगठन में वे देश भी शामिल हैं जिनके पास नयी तकनीक के बेहतरीन हथियार और अनुभवी सेना है। उनके सम्मिलित होने से निसंदेह इस संगठन को मज़बूती मिलेगी और इसके अतिरिक्त वे देश भी शामिल हैं जिन्हें बरसों से युद्ध जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है और वहां अमन व शांति का संकट है इसके अतिरिक्त बहुत से वे देश भी हैं जो इस समय केवल अपने बचाव के लिए जंग लड़ रहे हैं।

जहां इस संगठन का चारो ओर से स्वागत किया जा रहा है और उसे एक प्रभावित क़दम की संज्ञा दी जा रही है वहीं कुछ सवालात ऐसे भी उभर कर सामने आ रहे हैं जिनके जवाब फिलहाल स्पष्ट नहीं हैं। मिसाल के तौर पर इस संगठन की कार्यवाहियां जिन आतंकवादी संगठनों के खिलाफ़ होंगी उनमें पश्चिमी आतंकवादी संगठन भी शामिल हैं कि नहीं?ख़तरा इस बात का भी कि इस संगठन के द्वारा कहीं केवल मुसलमानों का ही ख़ून न बह जाए और इसका आरम्भ आईएस से हो क्योंकि फ़्रांस हमले के बाद लगता यही है कि आईएस की ज़रूरत ख़त्म हो चुकी है और उसकी कमर तोड़ना ही अमरीका के पक्ष मे है और यह काम मुस्लिम हुकूमतों के द्वारा पूरा कराना बहुत आसान है।

संगठन के लक्ष्यों के अतिरिक्त इसके सदस्यों के आन्तरिक समस्याएं भी महत्वपूर्ण हैं जिनके नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता है। मिसाल के तौर पर बहरैन की समस्या है, वहां अधिकतर आबादी शियों की है और सुन्नी अल्पसंख्यक हैं लेकिन सत्ता उन्हीं के

पास है। अब यदि इस संगठन का रुख़ यमन में हूशियों की ओर होगा तो निसंदेह बहरीन के बहुसंख्यक बहरीन के इस युद्ध में शामिल होने के खिलाफ़ होंगे जिससे वहां के हालात बिगड़ भी सकते हैं।

इसी प्रकार क़तर का मामला है कि उसने मिस्र के पहले चुने हुए राष्ट्रपति मुहम्मद मुर्सी का खुलकर समर्थन किया था और उनके केवल एक साल के सत्ता के दौर में साढ़े सात अरब डॉलर की मदद की पेशकश भी की थी। इसके अलावा क़तर पर हमास की मदद का आरोप भी लगता रहा है। जिसकी अमरीका व मिस्र के साथ सऊदी अरब ने भी निंदा की थी।

इस संगठन में फ़िलिस्तीन के शामिल किए जाने का भी ऐलान किया गया है लेकिन यह साफ़ नहीं किया गया है कि फ़िलिस्तीन से मुराद कौन सा क्षेत्र है, जैसा कि हम जानते हैं कि इस समय फ़िलिस्तीन दो हिस्सों में बंटा हुआ है यानि जार्डन नदी का पश्चिमी किनारा जिस पर महमूद अब्बास की फ़तेह पार्टी का शासन है और दूसरा हिस्सा ग़ज़्ज़ा पट्टी पर बसा हुआ है जो हमास के कन्ट्रोल में है। यह दोनो क्षेत्र इस्राईली सेना के रहम व करम पर हैं, जब चाहे उन क्षेत्रों में आवागमन को बन्द कर दिया जाता है। ग़ज़्ज़ा के मुसलमानों की मज़लूमियत से पूरी दुनिया परिचित है। लेकिन इससे भी इनकार नहीं कि सऊदी अरब के हमास से अच्छे संबंध नहीं थे इसलिए संभव है कि इस संगठन में महमूद अब्बास की सरकार की संलिप्तता हो।

इस संगठन में यमन को भी शामिल किया गया है लेकिन सवाल यह है कि कौन सा यमन मुराद है। उत्तरी यमन या दक्षणी यमन?क्योंकि इस समय अमली तौर पर यमन दो हिस्सों में बांटा जा चुका है। एक हिस्सा यमन का है जिसकी राजधानी सनआ है और इस पर हूशी शिया क़बाइलियों का क़ब्ज़ा है, जिनके ख़िलाफ़ इस समय सऊदी अरब ने जंग छेड़ रखी है और दूसरा हिस्सा दक्षिणी यमन का है जिसकी राजधानी उदन है और इस पर मन्सूर हादी के समर्थकों का क़ब्ज़ा है और इसको सऊदी अरब का समर्थन प्राप्त है। मन्सूर हादी को 2012 ई0 में सयुंक्त यमन का राष्ट्रपति चुना गया था जिन्होंने पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्लाह अब्बास सालेह को माफ़ी दे दी थी।

इस संगठन में पाकिस्तान भी शामिल है जबकि उससे पहले पाकिस्तानी सरकार ने हूशी विद्रोहियों के ख़िलाफ़ सऊदी अरब की सैन्य कार्यवाही में शामिल होने से इनकार कर दिया था जिस पर सऊदी अरब की ओर से नाराज़गी भी प्रकट की गयी थी। अब इस संगठन में सम्मेलन हूशी के ख़िलाफ़ कार्यवाही में पाकिस्तान का कौन सा पक्ष अपनाएगा यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसी प्रकार बंग्लादेश में भी इस संगठन में शामिल है जो अपने संविधान के अनुसार एक धर्मनिरपेक्ष देश है, 2010 ई0 में बंग्लादेश का क़ानून जब बनाया गया जिसमें धर्मनिरपेक्षता को केन्द्रीय महत्व प्राप्त है और सर्वोच्च न्यायालय ने धर्म के नाम पर राजनीति करने पर पाबन्दी लगा दी है। इस परिदृश्य में देखा जाए तो बंग्लादेश धार्मिक रूप से इस संगठन में शामिल नहीं हो सकता, यद्यपि केवल आतंकवाद के ख़ात्मे के विषय से उसके सम्मेलन की गुंजाइश निकल सकती है।

इस प्रकार यदि देखा जाए तो संगठन का बाह्य रूप अस्पष्ट नज़र आता है। क्योंकि इसमें शामिल कई सदस्य स्वयं अपनी अन्दरूनी मुश्किलों का शिकार हैं, जैसे लेबनान की आधी आबादी मुसलमानों पर आधारित है जबकि बाक़ी आधी आबादी ईसाई है या कुछ दूसरे अल्पसंख्यक समुदाय हैं।

ऐसे हालात में इस नये संगठन की क्या शक्ल बनेगी, इसका फ़ैसला तो वक़्त करेगा, बहुत संभव है कि संगठन के सदस्य सर जोड़कर बैठें और अपनी ठोस और प्रभावित रणनीति के द्वारा अन्दरूनी समस्याओं को हल करने का सफल प्रयास करें और इस संगठन को जाने अनजाने में पश्चिम के हित में प्रयोग होने से सुरक्षित रखें। फिर भी इससे इनकार नहीं है कि सऊदी अरब का यह क़दम एक प्रशंसनीय क़दम है और विशेषतयः वे कमज़ोर देश जो अपना बचाव नहीं कर सकते उनके लिए बहुत ही लाभदायक व सहयोगी है। ख़ुदा की ज़ात से उम्मीद है कि जल्द ही मुसलमानों के सर से पतन के बादल छटेंगे और मुसलमानों ही के हाथों मुसलमानों की तबाही का जो सिलसिला चल रहा है वह समाप्त होगा।

जबान की नेकियां

# बिना सोचे समझे कोई बात नहीं कहनी चाहिये

हुज़ूर स०अ० की बातों से मालूम होता है कि ज़बान मानव अंगों में बड़ी ताक़त व प्रभाव रखती है और इसकी ज़रा सी लापरवाही से दुनिया व आख़िरत में बड़ा वबाल होता है। इसी लिये इसकी हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है। अल्लाह तआला ने इसकी हिफ़ाज़त का हुक्म दिया है और इसकी निगेहबानी करने वाला तय किया है कि एक–एक शब्द सुरक्षित हो जाये।

अल्लाह का इरशाद है: "इन्सान ज़बान से कोई बात नहीं निकालता मगर उसके लिये एक निगरां तैयार है।" (सूरह क़ाफ़)

हमारे लिये ज़रूरी है कि हम जो बात ज़बान से निकालें ख़ूब सोच–समझ कर निकालें। बात कहें तो सच्ची और अच्छी कहें वरना ख़ामोश रहना बेहतर है।

हुज़ूर अक़दस स०अ० ने फ़रमाया: "जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिये कि बात कहे तो बेहतर कहे वरना ख़ामोश रहे।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

हमारा एक बड़ा फ़र्ज़ ये है कि बहुत से बातें हम बे सोचे समझे कह जाते हैं और इसका एहसास नहीं होता कि ये बात हमको कहां ले जा रही है और इसका क्या परिणाम आयेगा। कई बार एक छोटी सी बात कहने वाले को जन्नत पहुंचा देती है और कई बार जहन्नम का रास्ता दिखा देती है और कहने वाले को अपने अन्जाम की ख़बर तक नहीं होती।

हुज़ूर स०अ० का पाक इरशाद है: "बन्दा कई बार ऐसी बात बोल जाता है जिससे अल्लाह की रज़ा हासिल हो जाती है मगर उसकी अहमियत नहीं मालूम होती। इस बात के ज़रिये अल्लाह तआला उसके दर्जों को बुलन्द कर देता है और कोई बन्दा ऐसी बात कह बैठता है कि जिसके कहने से अल्लाह तआला का ग़ुस्सा नाज़िल होता है और उसको कुछ ख़बर नहीं होती कि इसके कारण वो आग में जा रहा होता है।" (बुख़ारी)

जब एक बात इन्सान को कहीं से कहीं पहुंचा देती है तो जिन लोगों को बहुत ज़्यादा बोलने की बीमारी है उनका क्या हाल होता होगा। इसलिये ज़्यादा बातचीत करने से बचना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। बेकार की बातें बड़े फ़ितनों और फ़सादों का दरवाज़ा खोलती है और इसका ख़मियाज़ा कई बार दुनिया में भुगतना पड़ता है और आख़िरत में तो लाज़िमी भुगतना होगा।

"तुम अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा बात न किया करो, ज़्यादा बोलना दिल को सख़्त कर देता है और सख़्त दिल आदमी अल्लाह तआला से बहुत दूर है।" (तिरमिज़ी)

अल्लाह तआला ने इस ज़बान में बहुत सी ख़ूबियां रखीं हैं और बहुत से ऐब। हर ख़ूबी व ऐब की निशानदेही कुरआन शरीफ़ और हदीस पाक में की गयी है और इस सिलसिले में बहुत सी हिदायतें दी गयी हैं।

अल्लाह तआला लिखने वाले और पढ़ने वाले को अपनी मर्ज़ी पर चलाये और ज़बान की हिफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन!

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE: 01 JANUARY 2016 VOLUME: 08

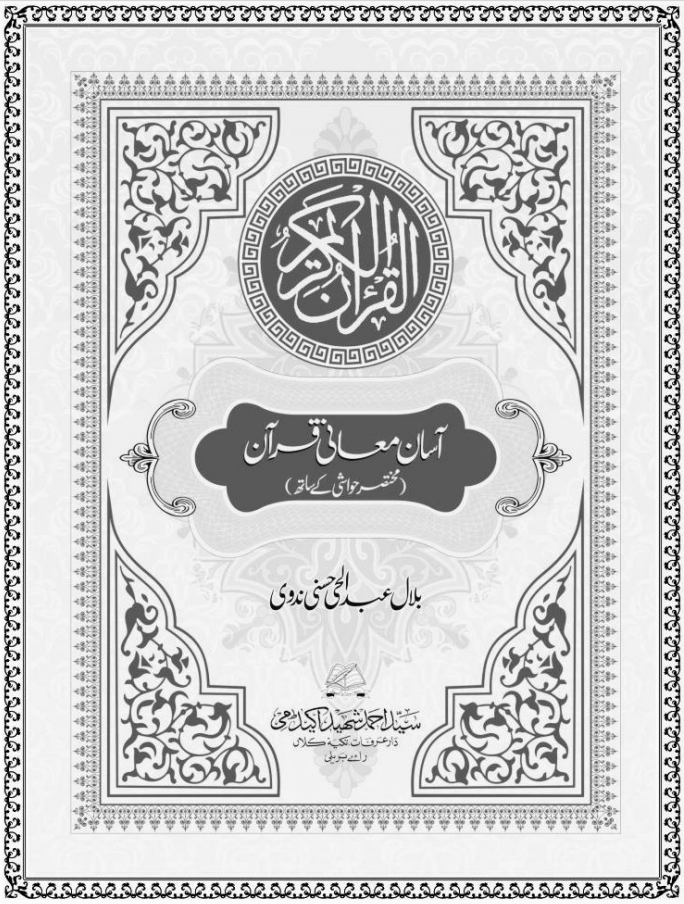


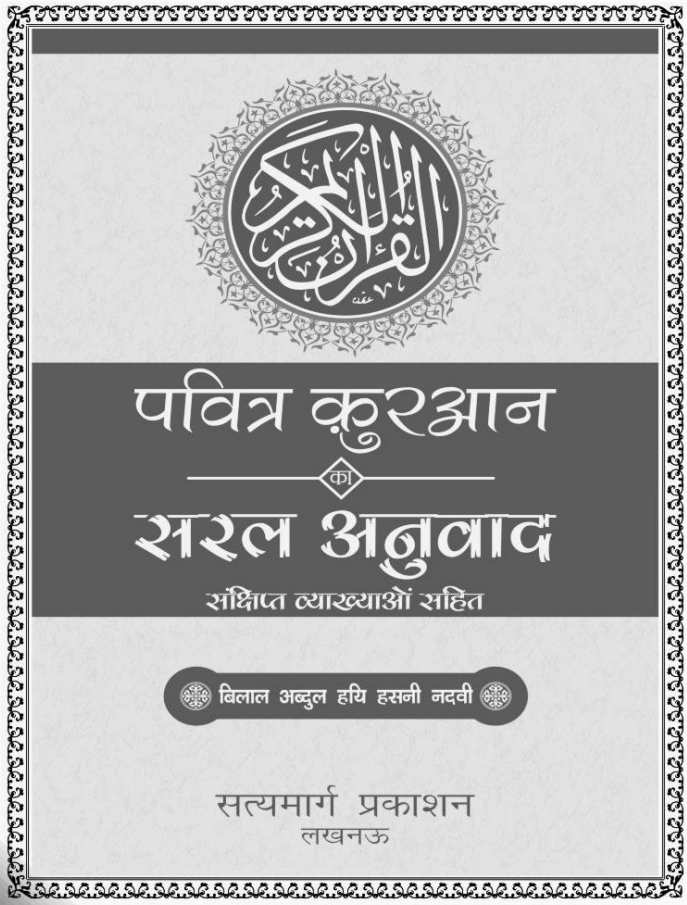


Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
**MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI**
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.